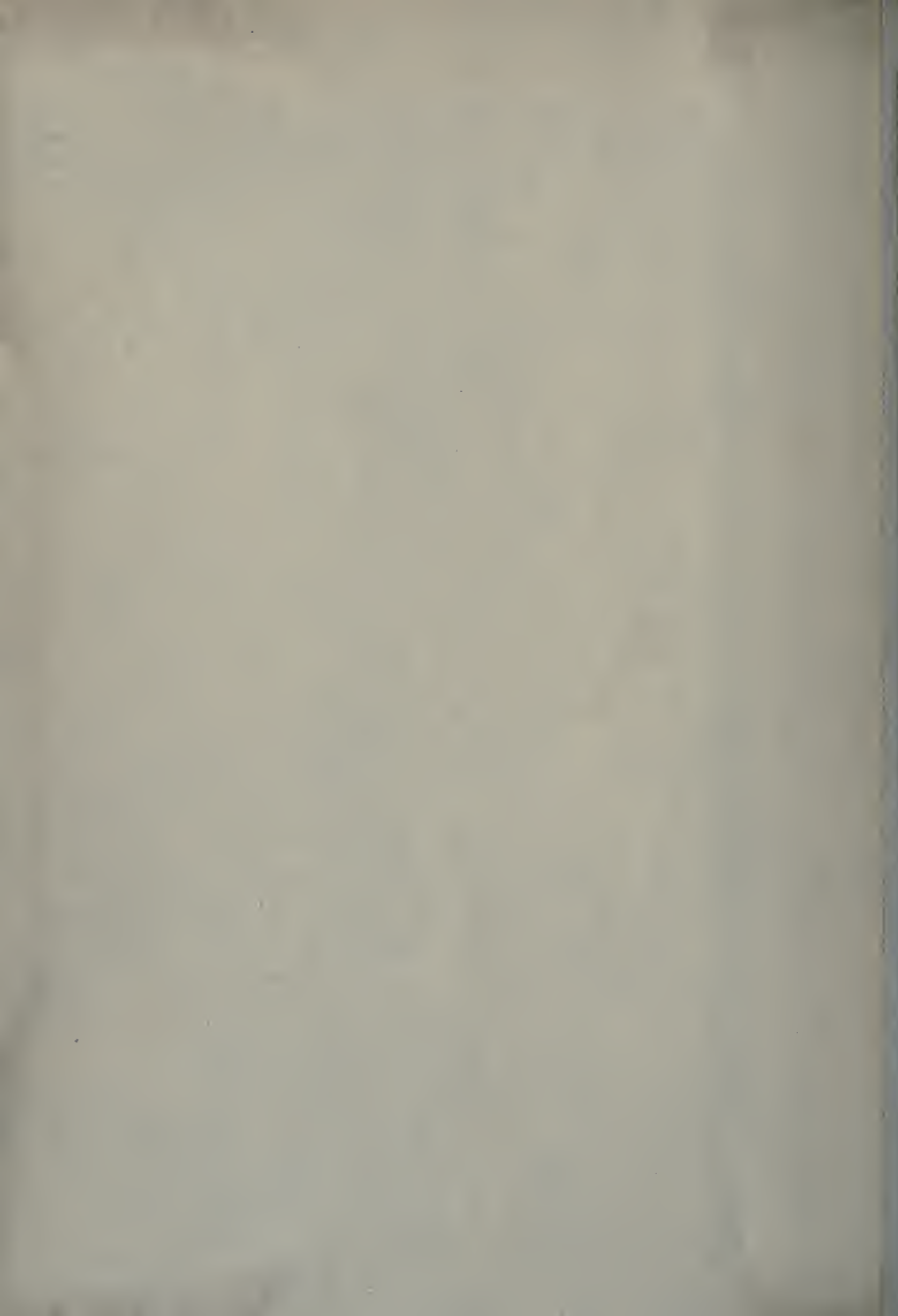


PC
3398
A7
1913

UNIV. OF
TORONTO
LIBRARY



AR MANA
PROUVENÇAU

PÈR LOU BÈL AN DE DIÉU

1913

ADOUBA E PUBLICA DE LA MAN DI FELIBRE

Porto joio, soulas e passo-tèms en tout lou pople dóu Miejour

AN CINQUANTO-NOUVEN DÒU FELIBRIGE



128791
21713.

AVIGNOUN

ENCÒ DE J. ROUMANILLE, LIBRAIRE-EDITOUR

19, CARRIERO DE SANT-AGRICÒ, 19

PC
3398
A7
1913

ESCLÜSSI

T'aura en 1913 tres esclüssi de soulèu e dous de luno.

Esclüssi de soulèu :

Lou 6 d'Abriéu, esclüssi parciau, invésible en Avignoun.
Lou 31 d'Avoust, esclüssi parciau invésible en Avignoun.
Lou 30 de Setèmbre, esclüssi parciau, invésible en Avignoun,

Esclüssi de luno.

Lou 22 de Mars, esclüssi toutau, invésible en Avignoun.
Lou 15 de Setèmbre, esclüssi toutau, invésible en Avignoun.

FÈSTO CHANJADISSO

Cèndre, 5 de Febrié.
Pasco, 23 de Mars.
Rouguesoun, 28, 29 e 30 d'Abriéu.
Ascensioun, 1 de Mai.

Pandecousto, 11 de Mai.
Ternita, 18 de Mai.
Fèsto-de-Diéu, 22 de Mai.
Avènt, 30 de Novèmbre.

TEMPOURO

| | | | |
|-------------|-------------|---------------|-------------|
| Febrié..... | 12 14 e 15 | Setèmbre..... | 17, 19 e 20 |
| Mai | 14, 16 e 17 | Desèmbre..... | 17, 29 e 20 |

Lou printèms coumenço lou 21 de Mars, à 5 ouro ;
L'estiéu coumenço lou 22 de Jun, à 1 ouro ;
L'autouno coumenço lou 23 de Setèmbre, à 16 ouro ;
L'ivèr coumenço lou 22 de Desèmbre, à 11 ouro.

Trento jour an Setèmbre,
Abriéu, Jun e Novèmbre ,
De vint-e-vue n'i'a qu'un .
Lis autre n'an trento-un.

VIN SAUTEL

Au vieux Ratafia de Mazan —

Demandez : UN SAUTEL

JANVIÉ



N. L. lou 7, à 10 o. 29.
P. Q. lou 15, à 16 o. 2.
P. L. lou 22, à 15 o. 40.
D. Q. lou 29, à 7 o. 35.

Li jour crèisson de 10 m.

FEBRIÉ



N. L. lou 6, à 3 o. 22.
P. Q. lou 94, à 8 o. 34.
P. L. lou 21, à 2 o. 4.
D. Q. lou 27, à 21 o. 13.

Li jour crèisson de 1 o 26 m.

MARS



N. L. lou 8, à 0 o. 23.
P. Q. lou 15, à 20 o. 58.
P. L. lou 22, à 11 o. 56.
D. Q. lou 29, à 12 o. 58.

Li jour crèisson de 1 o. 32 m.

| | | |
|----|-------|------------------------|
| 1 | dim. | JOUR DE L'AN. |
| 2 | dij. | S. Clar. |
| 3 | div. | Sto Genevivo |
| 4 | diss. | S. Ferriou. |
| 5 | Dim. | S. Simeoun de la coul. |
| 6 | dil. | Li Rét. |
| 7 | dim. | S. Lucian. |
| 8 | dim. | S. Severin |
| 9 | dij. | S. Julian. |
| 10 | div. | S. Pau l'ermite |
| 11 | diss. | S. Teoudosi. |
| 12 | Dim. | S. Gaspard. |
| 13 | dil. | Sto Verounico |
| 14 | dim. | S. Alari. |
| 15 | dim. | S. Bounei |
| 16 | dij. | S. Ounourat |
| 17 | div. | S. Antòni |
| 18 | diss. | Sto Flourido. |
| 19 | Dim. | S. Canut |
| 20 | dil. | S. Sebastian. |
| 21 | dim. | Sto Agnès. |
| 22 | dim. | S. Vincèn. |
| 23 | dij. | S. Ramoun. |
| 24 | div. | S. Bausèli. |
| 25 | diss. | Counv. de S. Pau. |
| 26 | Dim. | S. Ansile |
| 27 | dil. | S. Màri. |
| 28 | dim. | Sto Cesario. |
| 29 | dim. | S. Coustant |
| 30 | dij. | Sto Martino. |
| 31 | div. | Sto Marcello. |

| | | |
|----|-------|-------------------|
| 1 | diss | S. Ignàci, ev. |
| 2 | Dim | LA CANDELOUSO. |
| 3 | dil. | S. Blàsi |
| 4 | dim | Sto Jano. |
| 5 | dim | CÈNDRE. |
| 6 | dij. | Sto Doro. |
| 7 | div. | S. Richard. |
| 8 | diss. | S. Ginous |
| 9 | Dim. | S. Jan de Mata. |
| 10 | dil. | Sto Escoulastico. |
| 11 | dim | S. Adoufe. |
| 12 | dim. | TEMPOURO |
| 13 | dij | S. Dounin. |
| 14 | div | S. Valentin. |
| 15 | diss | S. Quenin. |
| 16 | Dim | S. Armentau. |
| 17 | dil. | Sto Mariano. |
| 18 | dim | S. Flavian. |
| 19 | dim | S. Valié. |
| 20 | dij | S. Ouquéri. |
| 21 | div | S. German. |
| 22 | diss | Sto Isabello |
| 23 | Dim. | S. Ramoun. |
| 24 | dil. | S. Matias. |
| 25 | dim. | S. Aleissandre. |
| 26 | dim. | S. Nestour. |
| 27 | dij. | Sto Ounourino |
| 28 | div. | S. Cassieu. |

| | | |
|----|-------|------------------|
| 1 | diss. | Sto Antounino. |
| 2 | Dim. | S. Semplice. |
| 3 | dil. | Sto Cunegoundo. |
| 4 | dim. | S. Casimèr. |
| 5 | dim. | S. Ambròsi. |
| 6 | dij. | Sto Couleto. |
| 7 | div. | Sto Perpètio. |
| 8 | diss | S. Jan-de-Diéu. |
| 9 | Dim. | PASSIOUN. |
| 10 | dil | Li 40 Martire. |
| 11 | dim. | S. Gregòri. |
| 12 | dim. | S. Massemin. |
| 13 | dij. | Sto Eufrasio. |
| 14 | div. | Sto Matiéudo. |
| 15 | diss. | S. Cesar-de Bus. |
| 16 | Dim | RAMPAU. |
| 17 | dil. | Sto Rèino |
| 18 | dim | S. Gerile. |
| 19 | dim. | S. Jousè. |
| 20 | dij. | S. Jouaquin. |
| 21 | div. | DIVÈNDRE-SANT. |
| 22 | diss. | S. Bèn-vengu. |
| 23 | Dim. | PASCO. |
| 24 | dil | S. Grabié. |
| 25 | dim | ANOUNCIACIOUN. |
| 26 | dim. | S. Massemilian |
| 27 | dij. | Sto Natalio. |
| 28 | div. | S. Ilarioun. |
| 29 | diss | S. Sist. |
| 30 | Dim. | QUASIMODO. |
| 31 | dil. | S. Benjamin. |

VIN SAUTEL

Au vieux Ratafia de Mazan

Demandez : UN SAUTEL

ABRIEU



N. L. lou 6, à 17 o. 49.
P. Q. lou 14, à 5 o. 40.
P. L. lou 20, à 21 o. 33.
D. Q. lou 28, à 6 o. 9.

Li jour crèisson de 1 o. 24 m.

MAI



N. L. lou 6, à 8 o. 25.
P. Q. lou 13, à 11 o. 45.
P. L. lou 20, à 7 o. 18.
D. Q. lou 28, à 0 o. 4.

Li jour crèisson de 1 o. 6 m.

JUN



N. L. lou 4, à 19 o. 57.
D. Q. lou 11, à 16 o. 38.
P. L. lou 18, à 17 o. 54.
D. Q. lou 26, à 17 o. 41.

Li jour crèisson de 13 minuto.

| | | |
|----|-------|--------------------|
| 1 | dim. | S. Ugue. |
| 2 | dim. | S. Franc. de P. |
| 3 | dij. | S. Ricard. |
| 4 | div. | S. Isou r. |
| 5 | diss. | S. Vincèn-Ferrié. |
| 6 | Dim | S. Prudènci. |
| 7 | dil. | S. Gautié. |
| 8 | dim. | S. Aubert. |
| 9 | dim. | Sto Souflo. |
| 10 | dij. | S. Macari. |
| 11 | div. | S. Leoun. |
| 12 | diss. | S. Jùli. |
| 13 | Dim. | Sto Ido. |
| 14 | dil. | S. Benezet. |
| 15 | dim. | S. Frutuou. |
| 16 | dim. | S. Lambert. |
| 17 | dij. | S. Flourènt. |
| 18 | div. | S. Anicet. |
| 19 | diss. | S. Oufège. |
| 20 | Dim. | S. Anseume. |
| 21 | dil. | S. Ouspice. |
| 22 | dim. | Sto Leounido. |
| 23 | dim. | S. Jorgi. |
| 24 | dij. | Sto Vitòri. |
| 25 | div. | S. Marc. |
| 26 | diss. | S. Clet. |
| 27 | Dim | Sto Zeto. |
| 28 | dil. | ROUGESOUN. |
| 29 | dim. | Sto Catarino de S. |
| 30 | dim. | S. Estròpi. |

| | | |
|----|-------|-------------------------------|
| 1 | dij. | ASCENSIOUN. |
| 2 | div. | S. Anastasi. |
| 3 | diss. | La Santo Crous. |
| 4 | Dim | Sto Mounico |
| 5 | dil. | Sto Sereno. |
| 6 | dim. | S. Jan Porto Lat. |
| 7 | dim. | S. Estanislau. |
| 8 | dij. | S. Dreséli |
| 9 | div. | S. Gregòri. |
| 10 | diss | S. Antounin |
| 11 | Dim. | PANDECOUSTO |
| 12 | dil. | S. Brancaci. |
| 13 | dim. | Sto Glicéro. |
| 14 | dim | TEMPOURO. |
| 15 | dij. | S. Pons. |
| 16 | div. | S. Gènt. |
| 17 | diss. | S. Pascau. |
| 18 | Dim | TERNITA |
| 19 | dil. | S. Celestin. |
| 20 | dim | S. Bernardin. |
| 21 | dim. | Sto Estello. |
| 22 | dij. | FÈSTO-DE-DIEU. |
| 23 | div | S. Deidié. |
| 24 | diss | S. D'unacioun |
| 25 | Dim. | S ^o Mario Jacobubè |
| 26 | dil. | S. Felip de Neri. |
| 27 | dim. | S. Oulivié |
| 28 | dim. | S. Vincens de Ler. |
| 29 | dij. | S. Massemin. |
| 30 | div. | S. Fèlis |
| 31 | diss. | Sto Peirounello. |

| | | |
|----|-------|-------------------|
| 1 | Dim. | Sto Lauro. |
| 2 | dil. | S. Marcelin. |
| 3 | dim. | Sto Cloutiéudo. |
| 4 | dim. | S. Outat. |
| 5 | dij. | S. Bounifaci. |
| 6 | div. | S. Nourbert |
| 7 | diss. | S. Glaudi. |
| 8 | Dim | S. Medard. |
| 9 | dil | Sto Pelaglo. |
| 10 | dim. | Sto Felicità. |
| 11 | dim. | S. Barnabeu. |
| 12 | dij | Sto Oulimpo |
| 13 | div. | S. Antòni de Pado |
| 14 | diss. | S. Basile. |
| 15 | Dim | Sto Moudèsto. |
| 16 | dil. | S. Cèri. |
| 17 | dim. | S. Verume |
| 18 | dim | S. Ouzias. |
| 19 | dij. | S. Garvasi. |
| 20 | div. | Sto Flourèngo |
| 21 | diss | S. Léufré |
| 22 | Dim. | S. Estròpi. |
| 23 | dil | Sto Agrevò. |
| 24 | dim. | S. JAN BATISTO |
| 25 | dim. | Tresl. de S. Aloï |
| 26 | dij. | S. Davi. |
| 27 | div. | S. Adelin |
| 28 | diss. | S. Irenèu. |
| 29 | Dim. | S. Peire e S. Pau |
| 30 | dil | S. Lucide. |

VIN SAUTEL

Au vieux Ratafia de Mazan

Demandez : UN SAUTEL

JULIET



N. L. lou 4, à 5 o. 7.
P. Q. lou 10, à 21 o. 38.
P. L. lou 18, à 6 o. 7.
D. Q. lou 26, à 9 o. 59.

Li jour demenis. de 45 m.

AVOUST



N. L. lou 2, à 12 o. 58.
P. Q. lou 9, à 4 o. 3.
P. L. lou 16, à 20 o. 27.
D. Q. lou 25, à 0 o. 18.
N. L. lou 31, à 20 o. 38.

Li jour demenis. de 1 o. 18 m.

SETÈMBRE



P. Q. lou 7, à 13 o. 6.
P. L. lou 12, à 15 o. 46.
D. Q. lou 23, à 12 o. 30.
N. L. lou 30, à 4 o. 57.

Li jour demenis. de 1 o. 32 m.

| | | |
|----|-------|------------------|
| 1 | dim | S. Marciau. |
| 2 | dim | LA VESITACIOUN. |
| 3 | dij | S. Anatoli. |
| 4 | div | S. Fortunat. |
| 5 | diss. | S. Pau de Liss. |
| 6 | dim | Sto Angèlo. |
| 7 | dil | Sto Aubiergo. |
| 8 | dim | Sto Isabèu. |
| 9 | dim. | S. Bres. |
| 10 | dij. | N.-D. de SANTA |
| 11 | div. | S. Pio |
| 12 | diss | S. Ounèste. |
| 13 | dim. | S. Anaclel |
| 14 | dil | S. Bonaventuro |
| 15 | dim | S. Enri. |
| 16 | dim. | N.-D. DOU M. C. |
| 17 | dij | S. Alèssi |
| 18 | div. | S. Ioumas d'Aq |
| 19 | diss | S. Vincens de P. |
| 20 | dim. | Sto Margarito |
| 21 | dil. | S. Vitour. |
| 22 | dim | STO MADALENO. |
| 23 | dim. | S. Cassian |
| 24 | dij. | Sto Crestino |
| 25 | div. | S. Jaume. |
| 26 | diss. | Sto Auo. |
| 27 | dim. | S. Pantati |
| 28 | dil | S. Sanari |
| 29 | dim. | Sto Mario |
| 30 | dim. | S. Loup. |
| 31 | dij. | S. Gerouan. |

| | | |
|----|-------|-------------------|
| 1 | div. | S. Père encadena |
| 2 | diss. | S. Estève. |
| 3 | dim | Sto Lidio. |
| 4 | dil | S. Doumergue |
| 5 | dim. | S. Ion. |
| 6 | dim | S. Sauvaire |
| 7 | dij | S. Gaïetan. |
| 8 | div. | S. Justin |
| 9 | diss. | S. Rouman |
| 10 | dim. | S. Laurèns. |
| 11 | dil. | Sto Rusticio |
| 12 | dim | Sto Claro |
| 13 | dim. | S. Pourcari |
| 14 | dij. | S. Chapoli. |
| 15 | div. | N.-D. D'AVOUST |
| 16 | diss. | S. Ro. |
| 17 | dim. | S. Jacinte |
| 18 | dil. | Sto Eleno |
| 19 | dim. | S. Geniès. |
| 20 | dim. | S. Bernat |
| 21 | dij. | S. Privat. |
| 22 | div. | S. Safourian |
| 23 | diss. | S. Sidoni. |
| 24 | dim. | S. Bourtoutmeu. |
| 25 | dil. | S. Louis |
| 26 | dim. | S. Zefrin |
| 27 | dim. | S. Cesari. |
| 28 | dij. | S. Julian. |
| 29 | div. | S. Jan degoutàssi |
| 30 | diss. | Sto Roso. |
| 31 | dim | S. Lazari. |

| | | |
|----|-------|-------------------------|
| 1 | dil | S. Baudeli. |
| 2 | dim. | S. Agricò. |
| 3 | dim. | S. Aidu. |
| 4 | dij | Sto Rousalio |
| 5 | div. | S. Lóugié. |
| 6 | diss. | S. Amable. |
| 7 | dim | S. Autau. |
| 8 | dil | N.-D. de SETÈMB |
| 9 | dim | S. Veran |
| 10 | dim. | S. Pouqueu. |
| 11 | dij. | S. Paciènt |
| 12 | div | Sto Bono. |
| 13 | diss. | S. Antounin |
| 14 | dim. | Eisaussamen de la Croux |
| 15 | dil. | S. Anfous |
| 16 | dim. | S. Cougnéli. |
| 17 | dim | TEMPOURO. |
| 18 | dij | Sto Esteveneto. |
| 19 | div | S. Renouvié. |
| 20 | diss | S. Estàqui |
| 21 | dim. | S. Matieu. |
| 22 | dil. | S. Maurise. |
| 23 | dim | Sto Tèclo |
| 24 | dim. | Sto Salaberge |
| 25 | dij. | S. Fermin |
| 26 | div. | S. Anzias |
| 27 | diss. | S. Cosme e D. man |
| 28 | dim. | S. Ceran |
| 29 | dil. | S. Miquèu. |
| 30 | dim. | S. Jiron e |

VIN SAUTTEL

Au vieux Ratafia de Mazan

Demandez : UN SAUTTEL

OUTOBRE



NOUVEÈMBRE



DESEÈMBRE



P. Q. lou 7, à 1 o. 47.
P. L. lou 15, à 6 o. 7.
D. Q. lou 22, à 22 o. 53.
N. L. lou 29, à 14 o. 29.

P. Q. lou 5, à 18 o. 35.
P. L. lon 13, à 23 o. 12.
D. Q. lou 21, à 7 o. 57.
N. L. lou 28, à 1 o. 42.

P. Q. lou 5, à 14 o. 59.
P. L. lou 13, à 15 o. 1.
D. Q. lou 20, à 16 o. 16.
N. L. lou 27, à 14 o. 59.

Li jour demenis. de 1 o. 31 m.

Li jour demenis de 1 o. 8 m.

Li jour demenisson de 17 m.

| | | |
|----|-------|-------------------|
| 1 | dim. | S. Roumié |
| 2 | dij. | Li S Ange gard. |
| 3 | div. | S. Cuprian. |
| 4 | diss | S. Francés d'As. |
| 5 | Dim. | Sto Tùli |
| 6 | dil. | S. Evòsi. |
| 7 | dim. | S. Baque. |
| 8 | dim. | Sto Reparado. |
| 9 | dij | S. Danis. |
| 10 | div. | S. Vergéli. |
| 11 | diss. | S. Castour. |
| 12 | Dim. | S. Veran |
| 13 | dil. | S. Geraud |
| 14 | dim. | S. Calist. |
| 15 | dim. | Sto Terèso. |
| 16 | dij. | Sto Rousselino |
| 17 | div. | S. Flourènt. |
| 18 | diss. | S. Lu |
| 19 | Dim. | S. Gerard Tenco. |
| 20 | dil. | S. Grapási |
| 21 | dim. | Sto Ursulo. |
| 22 | dim. | Sto Mario Saloumé |
| 23 | dij. | S. Tederi |
| 24 | div. | S. Maglòri. |
| 25 | diss. | S. Crespin. |
| 26 | Dim. | S. Flòri. |
| 27 | dil. | S. Salvian. |
| 28 | dim. | S. Simoun. |
| 29 | dim. | S. Narcisse. |
| 30 | dij. | S. Lucan. |
| 31 | div. | S. Cristòu |

| | | |
|----|-------|--------------------|
| 1 | diss. | TOUSSANT. |
| 2 | Dim. | LI MORT. |
| 3 | dil. | S. Marcèu |
| 4 | dim. | S. Chamas. |
| 5 | dim. | S. Zacarié. |
| 6 | dij. | S. Estève (d'Ate). |
| 7 | div. | S. Ernèsti. |
| 8 | diss. | S. Goufrédi. |
| 9 | Dim. | S. Maturin. |
| 10 | dil. | S. Just |
| 11 | dim. | S. MARTIN. |
| 12 | dim. | S. Reinié. |
| 13 | dij. | S. Mitre. |
| 14 | div. | S. Ru, ev. d'Av. |
| 15 | diss. | S. Eugèni. |
| 16 | Dim. | S. Euquèri. |
| 17 | dil. | St Agnan. |
| 18 | dim. | S. o Audo. |
| 19 | dim. | Sto Isabèu. |
| 20 | dij. | S. Eimound. |
| 21 | div. | PRESENT. de N.-D |
| 22 | diss | Sto Cecilo. |
| 23 | Dim. | S. Clemènt. |
| 24 | dil. | Sto Floro. |
| 25 | dim. | Sto Catarino |
| 26 | dim. | Sto Dóufino |
| 27 | dij. | S. Sifrèn. |
| 28 | div | S. Soustène. |
| 29 | diss | S. Savournin. |
| 30 | Dim. | Lis AVÈNT. |

| | | |
|----|-------|-----------------|
| 1 | dil. | S. Aloï. |
| 2 | dim. | Sto Bibiano. |
| 3 | dim. | Sto Eloque. |
| 4 | dij | Sto Barbo. |
| 5 | div. | S. Sabas. |
| 6 | diss | S. Micoulau |
| 7 | Dim. | S. Ambròsi. |
| 8 | dil. | COUNCEPCIOUN. |
| 9 | dim | Sto Loucaio |
| 10 | dim. | Sto Valiero. |
| 11 | dij | S. Damàsi. |
| 12 | div | Sto Daniso |
| 13 | diss. | Sto Lùci. |
| 14 | Dim | S. Nicàsi. |
| 15 | dil. | S. Ousèbi. |
| 16 | dim. | Sto Azalaïs. |
| 17 | dim. | TEMPOURO. |
| 18 | dij. | S. Graci. |
| 19 | div | S. Timouleoun. |
| 20 | diss | S. Filougone. |
| 21 | Dim | S. Toumas l. m |
| 22 | dil | S. Oounourat. |
| 23 | dim | Sto Vitòri. |
| 24 | dim. | S. Iye. |
| 25 | dij. | CALENDÒ. |
| 26 | div | S. Estève. |
| 27 | diss. | S. Jan, evang. |
| 28 | Dim. | Li S Innoucènt. |
| 29 | dil | S. Trefume. |
| 30 | dim. | Sto Couloumbò |
| 31 | dim. | S. Sivèstre |

VIN SAUTEL

An vieux Ratafia de Mazan

Demandez : UN SAUTEL

CROUNICO FELIBRENCO

I

De tout segur tendra bello plaço dins l'istòri felibrenco, aqueste autouno darrié ; sara, entre tóuti, l'autouno dis *Oulivado*. Noste mèstre Frederi Mistral, acampant sis óulivo, vèn de « n'óufri l'òli vierge à l'autar dóu bon Diéu » ; i'a de que n'entre-teni à tout jamai la lampo aluminado. Souto l'aubre de la pas, o felibre, noste mèstre a fa sa culido benastrado ; souto l'aubre inmourtau qu'oumbrejo encaro fres e clar en Prouvènço, coume au tèms de la Coumtesso, éu a vougu nous douna la leïçoun d'enaurança, de fe, d'amour, que tóuti n'avèn proun besoun, mau-grat nosto cresènço. O mis ami, mi gènt counfraire, manquen pas de lou saupre entendre... Auren-ti proun d'alèn pèr lou segui ? — Que que n'en siegue, vaqui mai un cap-d'obro prouvençau ; lis *Oulivado* dounon tóuti li pouèsto esericho pèr noste grand Mistral, dempièi la publicacioun dis *Isclò d'Or* ; adeja dos edicioun anóuncion un triounfle novèu. Lou tèms pòu se refresca ; i'a proun de rai sus Maiano pèr amadura d'autris óulivado.

Un libre superbe, qu'es espeli juste au moumen ounte lou mèstre coumplissié soun obro, sèmblo, à sa maniero, la counsacra. Lou *Jubilé de Frederi Mistral*, pèr Jùli Charles-Roux, es un mounumen d'amiracioun que restara coume provo de la religioun literàri e patriòtico de noste pople miejournau. La persounalita de l'autour, uno di plus marcanto de Marsiho emai de Paris, fai precious majamen l'óumage rendu au Maianen. Es-ti necite d'apoundre qu'aquéu libre es empremi, adourna, ilustra meravilhousamen ? D'abord qu'es signa J.-C. Roux !

Bon e bèl oubrage tambèn. *Les Troubadours cantaliens* que lou majourau du de La Salle de Rochemaure a fa revieüre emé soun talènt calourènt e vigourous. E, dóu meme, un estúdi sus *Jan de Roquetaillade-Yolet*, lou mounge lou plus saberu dóu siècle quatorgen.

D'abord qu'aquesto crounico acoumenço pèr li libre, m'agrado de presenta à nòsti legèire *Lo Romancero occitan*, de Prousper Estiéu, arderouso remembranço di cansoun de gèsto de l'Age Mejan; *Rai de soulèu*, poulidi pouèsio de Sfenosa; *Lou baile Anfos Daudet*, souveni de Batisto Bounet, emé traducioun franceso de J. Loubet, digno seguido de *Vido d'Enfant*, valènt-à-dire que se pòu rèn legi de mai pretoucant e de mai goustous; *Li Cant d'un Prèire*, odo piouso dóu canounge Grimaud; *L'Amigo rustico*, gracioussi pouèsio dóu jouine sendi Jan Pagan; *Ramoun VI*, grand dramo istouri, pèr l'afouga pouèto Laforèt; *La Vèsto*, galcio coumèdi dóu toulounen Lacroix; *Sant-Roc de Mount-Pelié*, dramo en bello lengo dóu Clapas, pèr F. Dezeuze; *Beline*, segoundo edicioun dóu flame pouèmo de Miquèu Camelat; e parieramen la segoundo edicioun di poupulàri *Cant dóu Terraire* de noste brave e afeciouna Charloun Riéu.

Prouvençau pèr l'esperit, senoun pèr la lengo, soun li libre e broucaduro dóu leiau e juste escrivan Jùli Belleudy que s'es douna la toco patrialo d'estudia li bons artistico, pintre, escultaire, gravaire, de noste país. E coume éu, lou capitani Reboulet dins soun istòri dóu *Generau d'Anselme*, lou proufessour Carle Brun dins lou *Regionalisme*, lou majourau Lhermite e la countesso dóu Rose dins si publicacioun subre *La langue d'Oc à l'École*, an fa bono obro felibrenco.

Se n'oublide mai que d'uni, es pas que siegon trop; mai soun proun pèr moustra que li vènt fres d'amoundaut an pancaro seca tóuti li sourgènt dóu terraire noste.

II

E sèmpre lou Miejour canto. Ah! n'en faudra mai óublida d'aquélis acamp que de pertout countunion de faire clanti l'inne de la Coupo. S'espassejon, noun soulamen dins lou miejour de Franço, mai enjusquo de la man d'eilà de la mar.

A la fin de l'autro annado, Jan Carrère mandavo de Tripoli à Maiano aquesto despacho: « Journalistes Italiens et Français, réunis en un

« banquet fraternel à Tripoli, chantent la *Coupo-Santo*, symbole du « réveil de la race latine et envoient au grand et glorieux poète méditerranéen hommage d'admiration, reconnaissance et respect. »

Pau de tèms après, èro en plen Nord que se felibrejavo. Lis « Enfant dóu Miejour de Fécamp » e « Li miejournau dóu Vabre-de-Gràci » se reünissien pèr brinda ensèn e mescla si voues dins de cansoun dóu païs nadau.

A Sceaux, li Felibre de Paris tenguèron, lou printèms vengu, uno sesilho — belèu dos? — amistadouso e reviscoulanto.

Aquéli qu'an lou bonur de noun èstre desracina, de Niço à Baïouno, espandiguèron si cor dins de fèsto pouëtico que se n'es parla bravamen. Bèu-Caire bateguè la rampelado avans tóuti. Lou cabiscòu Pons, la felibresso Artaleto, lou conse Basset, Colombon de Marsiho, Jouveau cabiscòu de la Mistralenco, Jouve dóu Ventour, Charloun, Giraud, Carle, Vivarés, lou tenor Jullian, Gros d'Arle, madamisello Duffau, e d'autri que noun sabe, fuguèron aplaudi à la taulejado e à la Court d'amour, pèr si discours, si vers, si cansoun. Lou Castelas di Montmorency, dóuminant la planuro roudanenco, avié jamai vist tal estrambord. M. Basset, lou conse de Bèu-Caire, parlè di glourious troubaire qu'ounourèron sa ciéuta : Antounieto Rivière, Pèire Bounet, Louvis Roumieux ; tout lou mounde se jougneguè à si regrèt coume à sis eloge. Artaleto noun èro la mens urouso d'aquelo journado tant reüssido. Legiguè aquesto letro que lou subre-mèstre l'avié mandado e que vau tóuti li joïo :

« *Bono Artaleto,*

« *Mi coumplimen à cha brassado pèr la fèsto felibrengo que vai se faire à Bèu-Caire soutu l'aflat de sa felibresso. De tout segur aquelo acampado sara galanto que-noun-sai. E galoïo encaro mai.*

« *Quau dis Bèu-Caire, dis tout de bèu e tout de gai e tout de flame !*

« *N'en sabe quaucarèn, ièu qu'au tèms de Roumièu e de la Rampelado que fasié tóuti lis an — à l'ócasioun de la fiero de Bèu-Caire, ai*

canta tant de fes à si taulado lou Maset de mèste Roumiéu e tóuti li cansoun de nosto Reneissènço.

« *Mai alor, Marto fielavo — e aro debano ! Tu, Artaleto, fieles encaro e siés toujour que plus jouino : lou Felibrige te douno d'alo.*

« *Iéu me veici à l'age ounte fau èstre sage.*

« *Quand se fai tard, disié moun paire, fau se retira, moun fiéu, « avans que fugue niue. » Vaqui perqué, ma bono, fau pas coumta sus iéu, ni mai sus la mouié, pèr l'acamp dóu Castelas. Aquí dóu rèsto ié saren proun representu pèr lou brinde qu'es escri au Pouèmo dóu Rose (Cant X, pajo 262) e dedica « I patrioto dóu ribeirés rousau ». Auras que de lou legi, s'acò t'agrado !*

« *Dounc longo-mai, gènto Artaleto, longo-mai felibrejes en santa coume en joio. E nòsti bon salut à touto la coumpagno !*

« *De tout cor.*

« *F. MISTRAL.* »

A Martel, i colo dóu Lot, souto la presidènci de Na Margarido Priolo, e au Puech d'Issolud, souto aquelo de Camiho Jullian, de l'Istitut, se tenguèron de bèlli reünion en memòri de la defènso d'Uxellodunum.

A Ceto, la *Felibrenca de Sant-Cla*, acampado encò dóu bon majourau Soulet, felibrejè coume se dèu, emé si vesin de *La Cigalo lengadouciano*; aqui la deviso « sian tout d'ami, sian tout de fraire », se pratiquè vertadieramen. Nòsti coulègo Theroun, Soulet, Galibert, Vivarés, Vabre, Bergoun, faguèron flòri. Uno pervenco d'argènt s'oufriguè au conse Maurise Laurens, qu'es pas d'aquéli amenistratour fougnaire, coume nosto causo n'en rescontro de-fes.

A dire lou verai, elo n'en rescontro quasimen plus. L'eisèmple es vengu de proun aut. Sènso parla de noste bèu majourau Maurise Faure, avèn entendu de senatour MM. de Selves e Caperan, un deputa M. Freyssinet, un prefèt M. Chardon, glourifica l'obro miejournalo i Jo Flourau de Verdun-sus-Garouno, davans de moulounado de pople; e lou conse-maje M. Faget, e lou cabiscòu Rigal, e lou mèstre Sourreil, e li felibresso Misè Ricard e Esparbés, prounouncièron en lengo d'O de pa-

raulo di miés ispirado, e lou souto-cabiscòu Pefourque, diguè calourentamen, en vers coume en proso, la glòri de la vièio cièuta de « Berdu, Cap-Loc del País de Ribière » ; e, dins l'aire blu, l'aviatour Arondel acoumpagnavo emé li picamen de la machino de soun mounouplan, lou brut dis applaudimen. Adounc, vivo l'*Escolo Carsinolo* !

En Bigoro, à-n-Aspet, l'*Escolo de ras Pireneos* inagurè lou 16 de setembre, un mounumen au trèbadour André Bouèry, pur fiéu di mountagno. Fuguè rèino d'aquelo fèsto la coumtesso de Galard ; parlèron superbamen lou majourau Bernat Sarriéu e lou conse d'Aspet. Uno letro mistralenco legido pèr Teoudor Castex courounè la sesiho. Pèr pas me repeta, dirai eici, uno fes pèr tóuti, que dins chasco reünion de chasque endré, s'oublidè pas de manda brinde e aclamacioun vers Mistral.

La Camargo a revist la tradiciounalo ferrado ounte li cavaliero Julio Reinaud e Founfono Guilherme an briha coume de coustumo, e lou mèstre-gardian Reinaud emé lou majourau marquès de Baroncelli se soun moustra digne d'uno reputacioun qu'a franchi lis estendudo prouvençalo. Après la *Nacioun Gardiano*, venguè la *Freiriè* i Sànti-Marò, e, miés encaro que li cavaucado o li courso enebrianto, li brinde apassiounèron tóuti. Osco pèr Foleò, Pau Rouman, lou capoulié Valèri Bernard e vint autre ! Osco pèr Adrian Frissant, que s'estrambourdavo en tèsto di bon journalisto presènt ! Lou cabiscòu Jan Grand proununciè un eloge esmòugu d'Ivan Pranishnikoff, lou talentous artisto qu'un maubre pausa subre soun lindau glourifico sa memòri. Coume diguè un ami dóu regreta Ivan :

Aro que lou bon pintre a fa l'obro requisto,
... S'es anana tant liuen que dèu plus reveni.
Cercaire de Beuta, vai countunia sa quisto
Dins li trelus de l'infini !

Forço escolo se soun encaro expandido en de supèrbi sesiho, e sèmpre miés lis uno que lis outro : la *Mistralenco*, l'*Escolo de la Mar*, l'*Escolo*

de Lar, aquelo dóu Ventour, aquelo dis Aup, etc. Uno poulido fêsto fuguè dounado au Pont-Sant-Esperit, à l'aflat de la coumtesso de Digoine ; uno outro acampè noumbrous souto li castanié de Mialet, li Cevendou cantant sa lengo d'O ; li Jo Flourau de dono S. dóu Terrail apelèron à Niço nòsti pouèto, seguissènt ansin li piado d'Aubanèu.

Is Angle, proche Avignoun, s'aubourè soulennamen lou retra dóu fin critique Armand de Pontmartin, que, tout à la fes parisen e provençau, avié saluda l'aubo di primadié e, tradiciounalisto arderous, avié viscu la man dins la man emé Roumanille ; nòsti bràvi counfraire Benezet Bru-neau e Toumas David, s'exprimant dins la parladuro di gènt de la terro, sachèron se faire aclama après lou bèu discours de Mounsegne Bé-guinot, evesque de Nimes e au mitan dis academician vengu de Mar-siho, de Nimes e d'Avignoun.

Mai, me dirés, e la Santo-Estello, la grand Santo-Estello óuficialo ? Anen plan, coulègo ; vous l'ai gardado pèr la bono bouco. Narbouno aculiguè li felibre miés que de prince ; drapèu, flour, musicaire, cantaire, vin d'ounour, representacioun poupulàri, coumplimen dis autourita e di soucieta literàri, que sabe iéu ? tout èro en brande. Lou conse Ferroul s'amerito de calourènt gramaci e tambèn lou dóutour Albarel e lou proufessour Anglade. Coume n'es pas un mestié de feignant, aquéu de capoulié, Valèri Bernard prounounciè tres discours, tres cop anima de la memo pensado : « Unioun en lengo d'O ! » E vague de l'aplaudi. Après éu, Robert Benoit, lou du de La Salle, li dóutour Vinas e Vabre, li jouvènt Azema, Bonfils, de Montaut-Manse, brindèron em'un vigourous envanc. Lou catalan Amade e M. Anglade acabèron li di-cho pèr de paraulo d'uno fièro elouquènci. Aro, voulès-ti saupre ço que se passè dins lis assemblado dóu Counsistòri ? Valèri Bernard fuguè renouma capoulié ; fuguèron elegi o reelegi assessour : Arnavielle, Camelat, Constans, Dujarric-Descombes ; fuguèron nouma majourau : Pau Rouman (Cigalo de Lar), Jan Fournel (Cigalo de Cleira), Ravous Gineste (Cigalo di Jardin). Sus lis àutri causo, crese que li delibera-cioun dóu Counsistòri soun secrèto, e l'*Armana*, decan di racountaire felibren, dounara l'eisèmple dóu silènci reglamentàri.

III

Autant que li felibrejado, senoun mai, li representacioun au teatre, li counferènci, asseguron l'espandimen de la lengo meiralò. Se jouguè à Narbouno, dos pèço di mai poulido d'Albare. A Mount-Pelié, la *Lau-seta*, soucieta clapassiero, ourganisè de representacioun chausido : coumèdi, dramo, cansoun, que Bonfils, Azema, Belloc emé tout un group de chatouno e juvenome ié culiguèron, tant e pièi mai, li roso dóu triounfle. A^e Malamort-de-Durèngo, Grabié Durand se faguè cou-nèisse coume un flame felibre^e dins sa *Remembranço*, vesiou calendalo en dous tablèu. *Lis Enfant de Font-Segugno*, à Gadagno, countuniant sa toco lumenouso, rampelèron li gènt dis alentour d'Avignoun, pèr ié faire ausi d'obro nouvello : *Alis e lou Patiaire*, dóu bon pcuèto Règis Vatton ; un galant à-prepaus d'Achile Vidal, e quàuquis àutri pèço dóu païs, coume *Lou Cieserèu e Rèsto dins toun vilage*, de Chabrand ; *La fauto d'un paire*, de Fallen ; *lis Amour de misè Coutau*, de Pèire ; *Li dous certificat*, de Marrel. E boutas ! acò's pas fini. Pican di man pèr la troupo font-segugnenco que gouvèrnon tant bèn Vidal e Vatton !

E li counferènci, li leiçoun, à Marsiho, pèr Fallen et Ruat ; à Mount-Pelié, pèr Chassary ; en Avignoun, pèr Lhermite ; à Paris, pèr Maurise Faure ! Sara que juste de gramacia à despart aqueste ancian menistre que, davans li gènti dono dis *Annales*, en i'aprenènt coume fau ama la bèuta avignounenco, i'a meravilhousamen presenta en pleno lusour l'obro di mèstre de nosto reneissènço.

A prepaus de l'ensignamen dóu francés dins lis escolo, emé l'ajudo de la lengo prouvençalo, lou fervènt regiounalisto Formentin, qu'amo nosto lengo coume un fiéu letru de-z-Ais, nous fai aremarca aquèsti rego dóu raport manda pèr M. Abit, ispetour d'Acadèmi, au Counsèu generau de Vau-Cluso :

« Une question voisine de celle-là, c'est celle de l'enseignement du français « dans ses rapports avec la langue provençale. Il règne à ce sujet une erreur « fâcheuse parmi un certain nombre de maîtres qui croient que la pratique de

« la langue provençale rend très difficile l'enseignement du français et retarde
« la culture intellectuelle de l'enfant.

« Sans doute, si le maître qui souvent, lui aussi, pratique les deux langues
« sans les distinguer suffisamment, ne prend pas soin de montrer continuelle-
« ment que chacune des deux langues a son vocabulaire, sa syntaxe et ses
« idiotismes, et d'expliquer à l'élève ses erreurs à mesure qu'il les commet,
« il est probable que la confusion persistera toujours et que les résultats ob-
« tenus seront médiocres. Mais combien il peut être utile que le maître au
« lieu d'« ignorer » le parler local qui est en somme la langue maternelle de
« nos petits Vauclusiens, y prenne au contraire à l'occasion un point d'appui
« pour ses observations et ses corrections ! »

Se pòu pas mies dire.

' El li pastouralo, e li predicacioun... Ai ! las ! venèn de perdre aquéu
que ié faguè mestriò entre tóuti, lou Paire blanc, lou majourau Savié
de Fourviero, à jamai amuti dedins soum cros de Roubioun, proche Vau-
Cluso, éu que l'a quàuquis an, semblavo en cadiero un papo felibren.

IV

Autre signe à remarca : es la fegoundo espelido di journau publica
en tout vo partido dins nosto lengo miejournalo. Jamai se n'es tant
vist qu'à l'ouro d'iuei. Bessai tóuti vous agradon pas, bràvi legèire ;
chascun de nàutri se grato mounte ié prus. Pièi, fau vous dire que
d'èstre felibre, se nous fai meiour, nous fai pas tóuti perfèt ; mai lou
bon òli vèn naturalamen au dessus, meme quand sarié pas l'òli pur dis
Oulivado.

Iéu d'abord, dins quento publicacioun que siegue, i'atrove de que
m'ensigna, e, diàussi ! lis ensignaire defauton pas. Veici, de memòri,
uno pichoto normo de journau que la coumpletarés à voste aise, e, se
sias de moun goust, n'en destriarés de maïstralamen oubra : *Lou Bour-
nat, La Coupo-Santo, La Campana de Magalouna, La Cigalo lengadou-
ciano, Era Bouts dera Terro, Era Bouts dera mountagno, Lou Felibrige,
Lou Galoi Prouvençau, Vivo Prouvènço !, L'Iòu de Pasco, Occitania,*

Le Provençal de Paris, Reclams de Biarn e de Gascougnò, Lou bon Semenaire, La Terro d'Oc, Lou Vîo-Soulèu. E n'en manco ! Ai bèu èstre armana, pode pas tout saupre.

De gènt que i'a, dison que lou Felibrige a plus qu'à bada e mourir. Bèn ! mis ami, s'es en trin de perdre l'alen, m'acourdarés que i'empa-cho pas d'èstre fieramen bavard !

LOU FELIBRE DÔU VERBOUISSET.

SUS LOU LINDAU DE L'ETERNITA *

De Prouvènço n'i'a plus
Ni d'Anglo-Terro...
Tout s'esperd dins la lus
E lou trelus...

Vese de cèu novèu, uno novello terro...

De Prouvènço n'i'a plus,
Ni d'Anglo-Terro !

I novèu ribeirés
Que Diéu me mostro
O gau ! iéu siéu coumprés !
Parle e i'a res

Que, galoi, noun responde en douço lengo nostro

I novèu ribeirés
Que Diéu me mostro.

O bèu nòvi eternau
De nòstis amo,
Zóu ! copo de ma nau
Li retenau,

Pren-me !... Parles, m'an di, la lengo de quau t'amo,
Dins un bais eternau
Parlo à moun amo...

* Pouèsio escrïcho à Loundro dins la niue d'ou 25 au 26 de Mars 1912, après avé re-çapup l'Estrèmo-Ouncion.

O, parlo, e qu'à moun cor
Toun cor se duerbe !
Parlo en ma lengo d'or,
Moun bèu Tresor,
Moun amour, tu la font de touto lengo, o Verbe...
Moun nòvi ! qu'à moun cor
Toun cor se duerbe !

DON SAVIÉ DE FOURVIERO.

OH ! D'AQUÉLI BOUGRE !

L'espetaclouso guerro di Nacioun Balkanenco, e entre tóuti di Bulgare, contro lou Turc manjo-crestian vèn de verifica l'esplicacioun d'un mot prouvençau, dóu mot lou mai energi e mai poupulàri de nosto lengo, lou mot *bougre*, que s'emplego emé lou sèns de gaiardiso, de forço, de valour : un bon bougre, un gros bougre, un grand bougre, un fièr bougre, un sacre bougre, un marrit bougre. Basto, aquéu mot, acò se saup, es vengu dóu noum meme di Bulgare o Boulgare — que, dóu tèms di Crousado, li crestian de Prouvènço aguèron l'óucasioun de counèisse de près : talamen qu'un troubaire de nòstis encountrado, Rimbaud de Vaqueiras, faguè fourtuno à Salounico, en plen païs di Bougre.

Autro causo. Aquelo guerro, que fai l'amiracioun emai la counfusioun di gràndi puissanço d'Europo, a mes en renoumado un brave pichot pople, li Mounte-Negrin, qu'an pèr rèi un descendènt, un flame descendènt de nòsti prince di Baus. Es prouva en efèt que lou proumié de la famiho que tèn lou Monte-Negro èro un nouma Balsa coume dirien *Baussen* o *Baussen*) que sourtié di prince di Baus. Es éu que bateguè e coussaïè li Turc foro de la Mountagno Negro. Que l'Estello di Baus, qu'acò 's l'Estello di felibre, posque lèu trelusi subre Coustantinople !

G. DE M.

LOU DOURMIHOÛS

Èr : de la *Bourréio d'Auvergné*.

Jóusè di Grameniero,
Aquéu bedigas,
Au founs de sa feniero,
Dor coume un soucas ;
E tant que la niue duro
Fai rên que sounja
Que li figo maduro
Es un bon manja.

Jóusè quand se reviho
Fasènt li badai,
Toujour en quauco fiho
Conto soun pantai ;
Mai nòsti reboundino,
En se trufant d'éu,
Respondon : « Quau dor dino....
Dourmihous, adieu ! »

Acò d'aqui fai vèire
Que, pèr se louga,
Es pas tout de s'encreière,
Fau se boulega :
Quau vòu tasta li figo
Dèu manda li det,
Car touto bello amigo
Vòu un fin cadet.

Jóusè di Grameniero,
Mascaro-linçòu,
Autant qu'un chin de niero
Dison qu'a de sòu :

Mai quau vers li chatouno
Fai lou parpaïoun,
Ié vau mai li poutouno
Que li picaïoun.

Souto uno caranchouno
Qu'es facho à prepaus,
Se saup que la pichouno
Jamai rèsto à paus :
Lou chat que la pessugo
Lèu es lou mignot,
Car fau qu'uno belugo
Pèr bouta lou fiò.

F. MISTRAL.

(Tira de « *Lis Oulivado*. »)

LA POULAIO ENRAUMADO

L'autre an m'atrouvave en Camargo eilalin dóu coustat di Santo pèr afaire qu'aviéu. Mis afaire acaba e dóu tèms qu'esperave la diligènci que fai lou service di Santo en Arle, musave un pau d'un mas à l'autre sènso m'aliuncha de la routo. Moun chin, qu'es encaro un cadelas, espoutavo li galino, fasié courre li canard ; lou leissave faire, sabe qu'es ajougui mai qu'es pas mau-fasènt e que fai ges de mau à la galinaio. Tout-d'un-cop se metegué à japa e à cousseja davans éu uno chourmo d'aperaqui dos dougeno de bestiàri esplumassa, empatarassa emé d'es-trasso, de patouias ; sabias pas dire ço qu'èro. Aquéli bestiàri enreguèron lou pourtau d'un mas e s'anèron estrema dins l'escour segui pèr moun chin que se ié sarravo contro.

Coume ère de lesi, intrère peréu pèr sibla lou chin e m'entreva un pau de la raço d'aquelo merço de poulastre que counaissiéu pas. La

masiero justamen sourtié de l'oustau e cousséjavo lou chin què japavo en l'aguichant à cop de mouto.

« Agués pas pòu, bravo femo, ié diguère, lou chin es un cadelas ; jogo à faire courre vosto poulaio, risco pas de ié faire de mau. A pre-paus, de-qu'es aquelo merço de galino o de canard, escusas se me troumpe, qu'avès aqui ? Quéntis iðu avès dounc mes couva ? Bessai es quauque bestiàri d'Africo que cregnon la fre e lis avès vesti coume sant Jòrgi ?

— Moun paure moussu, me rebequè la masiero, es de bèlli galino talo que li vesès. Se lis ai empatarassado coume acò, pecaire ! es que s'enraumavon. Sarié trop long se vouliéu vous counta pan pèr pan mis auvèri. Pièi vous trufarias de iéu, e se l'anavias esbrudi acò me pour-tarié tort.

— Ma bravo femo, agués pas pòu ; siéu pas d'eici, espère la veituro e ai lou tèms. Gardarai pèr iéu ço que me dirés.

— Eh ! bèn, moussu, vese que l'anarés pas crida sus li téule, e pièi l'a pas la mort d'un ome, anas ! Saurprés qu'es tout de la fauto de moun ome. Pèr moun malur, ai un ome qu'es un chuchou-moust, un escoulou-bureto que s'enchusclo de-longo ; liparié li gavèu pèr n'en tira lou jus. Pòde ges me soubra d'aigo-ardènt dins l'oustau. Léu amariéu bèn de pousqué semoundre la gouto quouro vèn quaucun nous vèire, e turta lou got coume se fai encò di gènt de la bono. Em' un ome coume éu, ai bèu à l'escoundre li boutiho, lis a lèu destouscado e soun vite seco, poudès crèire.

— Mai, santo femo, vese pas encaro coume vai que voste ome siegue l'encauso que vòsti galino soun malauto. M'afourtirés pas belèu que li cecignoto de voste ome enraumon la poulaio ?

— Se m'avias pas coupado, vous anave faire la provo que si. Adounc vous disiéu qu'èro un pau emai en proun ibrougnò, que m'escoulavo tóuti mi boutiho. Aquest an pèr vendùmio, aviéu mes dins l'aigo-ardènt un bèu plen panié de muscat de Roumo, d'aquel autin que vesès aquito davans la porto ; d'age, moussu, gros coume de nose. N'en

aviéu cacalucha un grand boucau que tèn lou mens tres pechié, e l'aviéu bèn escoundu sus lou tourno-vènt, darrié li douire d'ôulivo. Dôu mens lou cresiéu de l'agué bèn escoundu, pauro de iéu. Asso anas ! aquel embriago d'ome crese que dèu senti la bevèndo coume li trueio (emé lou respèt que vous dève), sènton li rabasso ! me lis aguè lèu destousca, mi bèus age, e tre qu'aviéu vira lou pèd, zan ! parèis, s'amouravo à la boutilio e tetavo quàuqui goulado, pièi ! l'endeman recoumençavo si poutoun au flasco, e zôu mai tournavo à chourla quàuqui degout. En fin finalo de goulado en poutoun, de poutoun en degout, tout lou jus s'escoulè dins sa gargamello. Iéu, quouro un bèu jour vouguère se-moundre un age à de cousin qu'èron vengu au mas, trouvère mis age de muscat tóuti degaia, tóuti móusi, plen de barbo. N'en carguère un de cop de sang qu'es pas necite de vous dire, pensas un pau. Agoutère lou boucau e pataffòu traguère lis age pèr lou fumié ; n'i'avié un bèu panié vous disc, acò fasié veni lou ploura de vèire aquelo bello frucho, ansin pourquejado ; embaumavon encaro, aquélis age, emai siguèsson tóuti negre e embarba. E rintrère dins l'oustau emé lou tron que me curavo.

« N'ère pas au bout de mi peno e se dis qu'un malur arribo jamai soulet. Quàuquis ouro après aquel escaufèstre sorte de l'oustau pèr ana pourta lou béure i porc (sènso respèt.) De-qué vese, pauro de iéu ? mi quinge galino e mi dos dindo estendudo au soulèu, l'arpo virado, rede morto. Aguère bèu li bacela, li mastrouia, èron morto e bèn morto, boulegavon plus ni pèd ni pato. De bèlli galino que me fasien soun iòu tóuti li jour, e sabès que se vendien dous sòu la pèço d'aquéu tèms ; e mi dos dindo que peréu fasien l'iòu. Metès-vous à ma plaço. Li cambo me manquèron e me braquère à ploura coume uno Madaleno.

« Es pas lou tout de ploura coume un vedèu, me diguère pièi ; aro es pas mi lagremo que revendran mi poulo ; fau se boulega pèr pas tout perdre ; es deman lou marcat en Arle ; ié pourtarai mi bèsti e l'ase fiche se n'en tire pas quàuqui sòu. E ni quant vau, ni quan costo, agantère mi poulo e vague de li pluma lèu-lèu e de faire vou-

lastreja la plumo. Ié leissère, coume se dèu faire, que li plumo dóu bout dis alo e dóu croupioun, pièi lis alounguère tóuti quinge emé li dos dindo, tèsto-pouncho sus la canisso, bèn au fres dins la croto, pièi m'anère jaire sènso soupa dóu pegin.

« L'endeman restère pas endourmido e bèn avans soulèu leva, aviéu déjà sauta au sòu dóu lié, e m'ère abihado pèr pas manca l'ouro dóu marcat. Anère lèu durbi la croto pèr acampa mi galino e n'en rempli uno canestello. O gràndi Santo, quente treviramen ! tre durbi, touto ma poulaio me partiguè davans emé de cacarasco, de glou-glou, e quau d'eici, quau d'eila, s'escapèron tóuti dins l'escour nuso coume de verme e courriguèron à l'abéuradou. Quand restère pas dóu cop es que mourirai pas d'uno ataco !

« Ço qu'èro arriba l'avès bessai devina. Mi poulo e mi dindo avien pita lis age e s'èron empegado coume de lignòu, coume moun ome quand lou pòu.

« Pièi coume erian encaro au tèms di fresquero, qu'aquéli pàuri bèsti tremoulavon e qu'èron de-longo à virouia à l'entour dóu fiò, pèr que s'enraumèsson pas e que calèsson pas de faire l'ïòu, lis ai atrencado coume ai pouscu. I'ai courdura d'abihage emé d'estrasso de vièi coutihoun miéu, de braio routo de moun ibrougnasso d'ome, de coursihoun dóu pichot. Aro, soun bèn caudo dins soun amagage, manjon bèn, cascacion coume se rèn n'èro e fan soun iòu cade matin. Dins quauque tèms, si plumo auran mai poussa, e pièi se pousson pas saren à l'estiéu e poudran ana tóuti nuso sènso s'enrauma se sis abihage soun gausi.

« Aro, moun bèu moussu, sènso vous enmanda crese que, se vous encourrés pas lèu, anas manca la veituro ; entènde li cascavèu sus la routo. »

TALERASSO.

— lèu, disié lou martegau, sabe pas perqué mi péu soun tóuti blanc e ma barbo touto negro.

— Bedigo, ié diguè l'autre, sabes bèn que ti péu an 20 an de mai que ta barbo.

GRAVADURO

PÈR LA DRAIO DE L'ERMITÒRI DE SANT JAQUE, A CAVAIOUN

Lou camin de Sant Jaque au paradis nous meno,
Souvèn-te-n'en,
Cavaïounen !

E respèto lis aubre e flour de touto meno
Que lou bon Diéu sameno,
Se vos qu'en paradis aqui nous proumenen.

1912.

F. MISTRAL.

LA NÈU

Souto lou pes de gros nivoulas, amassa
En bàrri de cendrouso lano,
A cha pau, di colo à la plano,
Lou cèu vèn de s'escagassa ;
E tout es tranquilas ; soulet, l'alo apaurido,
Dins lou mut tenebrun, lou quinsoun passo e crido.

Quand tout es atapa pèr la sournuro, lèu,
Plan-plan, en silènci, davalò,
Dirias coume uno raisso d'alo
De blanc parpaïoun. Es la nèu ;
Es l'eissame jala, es l'abiho espelido
Eilamount, dins lou brusc d'uno auro afrejoulido.

Espinchas amoundaut lou revoulun espès :
Remenant sis aleto molo,
L'abiho barrulo, tremolo
Pèr milo e pèr milo à la fes ;
Debano, mai s'esquiho, e viro, e voulastrejo,
Crentouso de toumba dins la fangasso frejo.

Dou cèu cabusso en plen dins la realita.
Ah ! boulego-lèi tis aleto,
Viro, reviro, fai pausetò ;
Lou pes es ta fatalita ;
Lou pes, mèstre de tout, mèstre sènso vergougno,
Que te tirasso en bas de sa brutalò pougno.

Vos pas ? Vendras tambèn au garouias pèr lié.
Paf ! ié sian. — Tu, l'abiho blanco,
Que fariés pali sus sa branco
La flour d'argènt de l'amelié ;
Tu, l'estello à siéis rai, l'estello escrincelado
Dins un lindo cristau pèr lou cisèu di fado ;

Tu, meraviho d'art, bebèi espetaclous,
Obro de l'ourfèbre di nivo,
Tu lou trelus, la gèmo vivo
Que fai dou diamant un jalous,
Tu, la nèu, te vaqui negado dins la sueio
Emé peto de l'ase e nogno de la trueio.

Pèr te tira dou garouias, o flour de nèu,
Pèr reveni la blanco estello,
Purificado, lindo e bello,
Que te fau ? Un rai de soulèu,
Poutoun que te béura. Pièi saras enaurado
De la fango, eilamont, dins li nivo daurado.

Mai, pèr lou repesca de la pudentarié,
Ounte es dounc lou soulèu qu'espèro
Lou negadis de la misèro ?
Ounte es lou soulèu que farié
Enaura l'abruti ; mounte es lou rai de flamo
Proun caud pèr adouba l'alo routo de l'amo ??

Tira dis *Oubreto provençalo*.

J.-H. FABRE.

LOU PRES D'UN COP D'IUE

Boudiéu, disié lou Grinche, coume n'en costo pèr un cop reçaupu dins lis iue. L'autre jour, un carretié foutavo sa bèsti em'acò la pouncho de soun fout piquè dins l'iue de ma femo que passavo aqui bèn tranquilo. Soun iue venguè rouge coume un pebroun, anerian vite vers lou medecin e pèr un degout d'aigo que ié vuejè sout la parpello, n'en fuguère pèr mi vint franc, un bèu louvidor.

— De-qu'es acò, vint franc ? Nautre passavian peréu bèn tranquile dins la grand carriero, em'acò la femo vouguè s'arresta davans la boutigo de l'orfèbre pèr un pau regarda. Moun ome, un anèu de diamant qu'esbarlugavo ié piquè dins l'iue e n'aguè plus ni trèvo ni repaus. De l'afaire n'en siéu esta pèr mi bèu vint-cinq louvidor !

LOU CASCARELET.

À MADAMISELLO NERTO DE BARONCELLI

EN I'ÓUFRISSÈNT UN PARÈU D'ESTRIÉU

Pèr vous, ma gènto Damisello,
Qu'avès un biais tant agradiéu,
Ai gaubeja 'quélis estriéu.
Quand lis aurès à vosto sellu,
Rapelas-vous, Madamisello,
Dóu qu'a pica soun ferre dur
E souvèto que, dins l'azur,
En vous pourtant, porton bonur !

Au Queilar, 1912.

LÉOUNCI BLATIÈRE.

AU CABANOUN

CANSOUN

Que sias urous au cabanoun
Quouro venès 'mé la famiho,
Vo 'mé d'ami, sènso façoun,
L'anas lou capèu sus l'auriho ;
Aquito passas de bouen tèms,
Vous regalas, cauvo requisto,
Ivèr, Autouno, Estiéu, Printèms,
Aquito passas de bouen tèms,
Cauve requisto.

Que sias urous au cabanoun
Quouro anas faire un bouiabaisso
Vo faire vira lou trissoun,
Vau miés que de brifa de jaisso ;
Avès lou nas coume un pebroun,
Puei fès peta de cansouneto,
De roumanso vo de cansoun,
Cantas, lou nas coumo un pebroun,
De cansouneto.

La Seyno 1911.

Que sias urous au cabanoun
Quand rroupihas sus l'erbo fresco,
Segur pèr un còup de canoun,
Boulegarias pas la ventresco,
E se tubas lou cachimbau
Vo cigaro, vo cigareto
Que lou cèu toumbe, v'es egau,
Quouro tubas lou cachimbau
Vo cigareto.

Lou souar partès dóu cabanoun,
Vous tenènt tóuteis en brasseto,
Cantas de galòii cansoun
Que sènton la ferigouleto,
La sàuvi 'mé lou roumaniéu ;
Avès resoun acò v'embaumo,
Ami, cresès ço que vous diéu,
La sàuvi 'mé lou roumaniéu,
Acò v'embaumo.

PÈIRE GINOUVÈS,
de l'Escolo de la Targo de Touloun.

UN BON BOUGRE

Un sòudard qu'avié la lengo un pau trop longo e qu'èro belèu jamai
ana à l'escolo pèr i'aprene lou parla fin, un jour diguè en parlant de
soun generau « aquéu bougre... »

— E, se vous fai pas mai, aquéu generau èro lou generau Bonaparto,

rèn qu'acò ! Mai aqueste s'entrevavo de tout, di pichòti causo coume di pu grandò.

Un sarjant qu'avié 'ntendu lou prepaus mal-ounèste, lou repetè au liò-tenènt que lou repetè au capitani que lou diguè... basto, de l'un à l'autre arribè is auriho de Bonaparte. Mai Bonaparte lou prenguè pas pèr rire e faguè veni lou sarjant :

« Es vrai, ié diguè, que m'as entendu trata de bougre ? »

— Es vrai, diguè lou sarjant.

— E quau es aquéu mau-parlo que se permet tàli paraulo ?

— Es Untau, moun generau.

— Vai lou querre ? »

E anèron querre lou sôdard.

« Es vrai, diguè Bonaparte, que m'as apela « bougre » ? »

— Es vrai, moun generau ; mai i'a tres sorto de bougre : i'a lou « paure bougre », acò 's iéu, i'a lou « bon bougre », acò 's vous, e i'a lou « marrit bougre », acò 's éu, faguè en designant lou manèfle.

Aquí Bonaparte signè de soun avis e faguè ficha lou sarjant is arrèst.

LOU CASCARELET.

BRINDE À L. FONTANIEU

COUNSEIÉ GENERAU DÓU GARD

*que, sus un camarguen, Jaque, de la manado de Dijòu, faguè 300 kiloumètre
en 3 jour, despassant de 100 kiloumètre, à tèms egau,
tóuti lis encouregudo de l'Armado e gagnant uno escoumesso de 1,000 fr.*

Ami, dins li cafè coume se parlo bèn !

Que se trais d'escoumesso ! e coume, emé sa lengo,

Chascun béu lou camin e doumino li gènt !

Mai, se noste Miejour fai rounfla lis arengo

En veritable fiéu di vièi forum Rouman,

Rintrò à trau entre veïre un sabre franchimand.

Tu, Fountaniéu, de-bon as recassa la paumo,
E 's éli, pèr un cop, qu'an engouli sa baumo :
As fa pèr lou Miejour emé toun camarguen,
Mai que milo discours. l'as moustra belamen
Qu'en aguènt de chivau pèr vincre si gancherlo,
Avèn d'ome qu'es pas facile d'escarni.
Fountaniéu, brinde à tu, e vivo l'Aveni :
l'a de pan sus la taulo e de vin dins la gerlo,
E la raço a de mascle e pòu vèire veni.

F. DE BARONCELLI.

Eimargue, 10 de setèmbre de 1911.

PÈR IVAN PRANISHNIKOFF

O tu que, davalant de la blanco Russio,
Ivan, te siés pausa coume lou ciéune auben,
Sus lou sòu prouvençau, chausissènt pèr famiho
Lou pople di gardian, long di clar camarguen ;

O tu qu'as entela touto la pouèsio
E la lus dóu Desert, malancòni e seren
Dins soun mudige sant e dins soun armounio ;
Qu'as parla nosto lengo en fiéu de bon Santen ;

Qu'abile à maneja nòsti mounturo lèsto
Autant que ti pincèn, as courseja de biòu
E 'n groupo carreja de bèlli chato à vòu,

Iéu auboure moun ferre, au-jour-d'uei, sus ma tèsto,
Tres cop, à toun ounour, en fàci di gardian,
Di Santo, dóu Soulèu e de Prouvènço, Ivan !

F. DE BARONCELLI,

I Santo, 8 de setèmbre de 1912.

GRAND JO FLOURAU SETENÀRI DE 1913

Lou councours es dubert entre tóuti lis escrivan de lengo d'O. Soulet li majourau pourran pas courre li joio.

L'ourtougràfi felibrenco es de rigour, mai tóuti li dialèite soun amés Tóuti li sujet podon èstre presenta.

A. — *Pouèsio* ; Odo, cansoun, teatre, recuei, etc.

B. — *Proso* : Conte, rouman, istòri, etc.

Lis obro publicado despièi mens de sèt an, coume lis obro inedito, pourran councourre dins li mémi coundicioun.

La jurado es coumpausado de sèt majourau, e decernira :

Un proumié pres,

Dous segound pres,

Dous tresen pres,

E autant de mencioun que sara necite ; i 'aura en noumbre sufisènt : flour, beloio, medaio d'or e d'argent, etc.

De mai, souto la coundicioun qu'anan dire, lou journau *Occitania* dounara generousamen :

1° **Uno soumo de milo franc** reservado à la proumiero joio de pouèslo ;

2° **Uno soumo de cinq cènt franc** reservado à la proumiero joio de proso.

Li recoupènso saran despartido coume seguis :

A. — *POUESIO.*

Pèr uno obro escrichè à bèl esprèssi (sujèt libre) o pèr uno obro o un ensèmbles d'obro inedito o publicado despièi li grand Jo flourau de 1906 :

PROUMIERO JOIO. — Proumié pres : Uno courouno argentalo d'oulivié.

SEGOUNDO JOIO. — Un segound pres : Roso argentalo.

TRESENCO JOIO. — Un tresen pres : girouflado argentalo.

AUTRI JOIO. — Mencioun, medaio, etc.

Lou laureat gagnaïre de la Proumiero joïo de pouësio (proumié pres) sara en sesiho soulèmno prouclama Mèstre en gai-sabé ; chausira quate-cant la rèino de la fèsto, que prenènt pèr set an lou titre de Rèino dóu Felibrige, ié pausara sus la tèsto la courouno argentalo, e de mai, *s'es felibre mantenèire*, iscri avans lou 31 desèmbre 1912, recebra la soumo de **milo franc** bèn dindanto.

Li segound e tresen pres dounaran de dre au titre de Mèstre en gai-sabé, valènt-à-dire que coumtaran coume li proumié pres di Jo Flourau ourdinàri dóu Felibrige que n'en fau tres pèr davera lou titre.

B. — PROSO.

Pèr uno obro escricho à bèl esprèssi (sujèt libre), o pèr uno obro o un ensèmbles d'obro inedito o publicado despièi li grand Jo flourau de 1906.

PROUMIERO JOÏO. — Un segound pres : paumo argentalo.

SEGOUNDO JOÏO. — Un tresen pres : plumo argentalo.

AUTRI JOÏO. — Mencioun, medaïo d'or e d'argènt, etc.

Lou gagnaïre de la proumiero joïo de proso recebra uno richo paumo argentalo e de mai, *s'es felibre mantenèire*, iscri avans lou 31 desèmbre 1912, la soumo de **cinq cènt franc** en bèl argènt tintin.

Li segound e tresen pres dounaran de dre au titre de Mèstre en gai-sabé, valènt-à-dire que coumtaran coume li proumié pres di Jo Flourau ourdinàri dóu Felibrige que n'en fau tres pèr davera lou titre.

Lis obro — en double eisemplàri; se soun inedito; en triple eisemplàri, se soun estampado, — auran d'èstre mandado *direitamen pèr sis autour, avans lou 15 de febrîé 1913*, au doutour J. Fallen, en Aubagno (Bouco-dóu-Rose).

Lou Baile dóu Felibrige,
D^r J. FALLEN.

Lou Capoulié,
Valèri BERNARD.

LOU GRIPO-ROUSSIGNÒU

Au mes de Mai, sus uno busco
Lou roussignòu, plegant lis iue,
S'èro endourmi dedins la niue ;
Mai lou regit d'uno lambrusco
Dins sa vediho l'arrapè —
E lou vaqui pres pèr li pèd.

Lou roussignòu, quand se reviho,
A bèu, pecaire, arpateja ;
Au quicho-pèd se vèi penja :
« Ah que soun traito li vediho !
Adiéu ma bello e mi cansoun :
Me fau mouri sus un bouissoun. »

Es desempièi que dins Prouvènço,
A la jitello dóu maiòu
Ié dison *gripo-roussignòu* ;
E desempièi, pèr sa defènso,
Dedins li niue dóu mes de Mai,
Li roussignòu dormon jamai.

E sus si gardo, quite e lite,
Touto la niue menant rumour,
Fan que canta pèr sis amour :
Ah ! que li vigno crèissòn vite !
En tèms d'amour, mi bèus ami,
Vau miés canta que de dourmi.

F. MISTRAL.

(Tira de « *Lis Oulivado* », que vèn de parèisse.)

LOU PATROUN DI BUGADO

Lou curat de Mouniéu, fuietant soun ordò,
Cercavo un sant pèr sa bugado.
— Mai, Moussu, ié cridè sa chambriero afiscado,
Que sias bon ! avèn pas lou grand sant Mikadò ?

LA CANSOUN DÓU MISTRAU

(Èr : *Nous irons partout où nous voudrons.*)

I

Quouro tout l'estiéu, sus li pin,
Brounzino lou clar tambourin
De la cigalo,
Di cor di fiho, di garçoun
Lou Diéu d'amour fai la meissoun
Emé sis alo ;
De sa casso es countènt
vous canto souvènt :

Lou mistrau
Es un vènt magistrau ;
Boufo sus lis oustau
De la Prouvènço ;
Canto de Franço lou paradis
Qu'es noste bèu païs
E sa jouvènco.
Lou mistrau
Es un vènt magistrau
Que vèn boufa sus nosto reneissènço !
Fieramen de-longo boufara
E degun jamai l'empachara.

II

An souto lou courset redoun,
De Vènus dous poulit tetoun,
Nòsti chatounno ;
Negre vo blu, sis iue tant clar
Retrasoun lou cèu e là mar
Dins si vistouno.

Quand lou mèstre di vènt
Boufo, canton souvènt :
Lou mistrau, etc...

III

De Mirèio lou parla dous
Es lou refrin dis amoureux
De la Prouvènço ;
Mantenen nòsti tradicioun
De Niço fin-qu'en Avignoun,
A la Durèngo
Lou Mistrau boufara
E nous ajudara.
Lou mistrau, etc...

M. BERTRAND,
Cabiscòu de l'Escolo de Lerin.

MOUN BOURRÈU

A-n-Antòni Berthier.

Quand lou cièr esbléugis, que lou soulèu dardaio
Li rescontre de-fes, caminant dous pèr dous ;
E de long di sebisso, en seguissènt li draïo
Van se poutouneja, li jóuinis amoureux...
Afouga calignaire an lou cor tout en aio.
Souvènt, de-vers li prat, en culissènt de fious,
Front clina contre front, bras nousa 'utour di taïo
Lis entre-vese ansin, que m'an l'èr tant urous !
Alor, iéu que moun cor subis l'orre martire
De noun saupre ço qu'èi ni poutoun ni sourrire
M'encourre vitamen liuen d'aquéli parèu,
E te maudisse, tu ! fenat ! bastard dóu diable,
Amour ! goustous is un, pèr iéu tant ahissable
Que sènso me counèisse ai ! las, siés moun bourrèu !

ANTÒNI BLANCHARD.

LOU GROS MALAUT

Lou gros Boulidou es d'aquéli que tout ié vèn en graisso ; peso mai de cènt vint kilo e, pecaire, boufo coume uno serp tre que vòu se douna un pau de biaï. Pòu plus mounta sis escalie nimai escala sus sa litocho ; alor coucho en bas dins sa cousino sus uno bassaco de fueio de gros blad.

Li gènt ié dïson :

« Déurias pas tant manja e vous boulega un pau mai. »

Ié fai bon à dire i gènt, anas vous reteni de manja quand la fam vous curo, bouleguas-vous quand l'alén vous manco pèr metre un pèd davans l'autre, e que sias tout-d'un-tèms bagna de susour coume se sourtias de l'aigo.

Lou tout es que mau-grat li counsèu, li poutringo de medecin e d'abou-ticàri, lou gros Boulidou vèn de mai en mai gros e s'acampo de graisso.

L'autre jour aguè 'no marrido indigestioun de boudin (se counèis plus quouro manjo de boudin, bèn tant lis amo), e cujè mouri dins la niue. Mandè querre lou medecin que lou chaspè, l'escoutè davans, darrié, pertout, pièi, vesènt qu'avié afaire qu'à un avalo-tout-crus, ié dounè pèr counsèu de pati quàuqui jour, pièi de viéure d'aigo boulido e de vin de granouio pendènt uno mesado. Lou gros Boulidou qu'a toujours pòu de mouri de fam, s'espantè de talo ourdounànci. Arregardè lou medecin que s'aubouravo tout rampous de s'èstre tant beïssa pèr chaspa soun malaut e l'escouta darrié l'esquino, sus aquelo bassaco tant basso aqui pèr lou sòu.

— Parai moussu ? ié diguè ansin, siéu un gros malaut ? Vese à vostre èr que m'atrouvas bèn bas !

— Eto, moun bèu, pode pas te dire de noun, siés un gros malaut, lou plus gros de mi malaut, ié rebequè lou medecin en ié picant sus la ventresco, e t'escounde pas que t'atrove bèn bas, de-segur, bas que se pòu pas mai... talamen bas que n'ai aganta un bèu mau d'esquino ! »

TRISTESSO !

Èr : *Que le temps me dure.*

Se moun amo es tristo,
S'ai lou cor en dòu,
Es de l'avé visto
Ras dóu rageiròu.
Mau-grat l'aigo claro,
Lis aubre flouri,
La doulour qu'ai aro
Me fai trop soufri !...

Ma vido, pecaire !
Es que pensamen ;
Soun vira de caire
Mi còuntentamen.
Pensatiéu, se courre
Li champ isoula,
En repaus, se ploure,
Res vèn m'assoula.

D'entèndre l'aureto
'Mé soun dous mumur
Beisa li floureto
Fai pas moun bonur ;
Lou riéu 'mai cascaie
Raiant au pesquié,
Liogo que m'esgaie
Me fai pus inquiet.

Ni luno que briho,
Ni soulèu ardènt,
Ni cant d'auceliho
Me fan plus countènt ;
Rèn pòu me destraire,
Mi bèu jour s'envan,
Mi soucit li traire
Es toujours en van !

La bello Craenco
Fasié moun soulas,
De l'erbo maienco
N'es partido, ai ! las...
E liuen de Durèngo
Culis d'àutri flour !...
Desempièi siéu sènso
De joio e d'amour.

Au Paradou, lou 20 de Setèmbre.

CHARLOUN RIÉU.

-
- Perqué se dis qu'un vicàri sèmblo à-n-un pous ?
— Pèr-ço-que lou vicàri es coume lou pous, demando d'èstre cura.

BELAUD DE LA BELAUDIERO

Dounan eici uno odo, o pulèu uno coumplanchò d'ou grand pouèto prouvençau Louis Belaud de la Belaudiero (1557-1588), qu'au tèms di guerro de la Ligo, en novèmbre de l'an 1572, fuguè mes en presoun dins la vilo de Moulins. Belaud èro de Grasso, mai lou mai que se plasié èro en vilod'Avignoun ounte i'avié, parèis, coume en Arle e à-z-Ais, proun d'aquéli bon gouapo qu'apelavon *arquin* e que se deletavon à reviéuda la lengo e pouèsio prouvençalo, coume an fa vuei li felibre. La lengo de Belaud es aquelo que parlavon de soun tèms, i'a tres cènts an.

ODO SUS LA MISÈRI

qu'enduro un presounié.

Quand un aubre es toumbat
De quauque fort aut moure,
L'on ves de tout coustat
Poble prestament courre
Ou anar au grand trot,
Pèr cargar lou hardot

Ou quand Cères permet
Que li toundon la tèsto,
Fremos, enfantelets
Courron coumo tempèsto,
Culhènt à pleno man
De glenos pèr tout l'an.

Ensin, quand sèns resoun
Un paure miserable
Es fourrat en presoun,
Coumo un ai à l'estable,
Tous malurs e tous maus
Li courron à grands sauts.

Car tant lèu qu'es boutat
Dins la prefoundo fosso,
La grandò umidetat
Subitament lou trosso;
E devèn, si vous plas,
Plus transit qu'un pedas.

Lou chin de soun oustau
Plus qu'éu fa bono chiero;
Encaro n'a qu'un pau
De palho pèr lichiero,
Car au bèn sòu de Diéu
Fau que fasse soun niéu.

La frech, la fam, la set,
Pèr la gorjo l'arrapon;
Puei un escadrounet
De gros picards l'atrapon,
Lous quaus journalament
Li dounon grand tourment.

Si vèn qu'es acusat
De quauque gros afaire,
Subit es enferriat
Coumo l'on ves un pouaire :
E noun fau aver pòu
Que fasse ço qu'èu vòu.

Mai quand la bijarrié
Pren à Minos lou juge,
Mando en counsierjarié
De diabloun un deluge,
Pèr lou faire venir
Davans si pèr l'ausir.

E quand es arribat
Au dedins sa cambreto,
Subit es assetat
Sus uno escabeleto :
Li demando soun noum,
Soun païs e renoum.

Près d'èu, un gros tripet
Sus lou papié grafigno
Tout ço que lou pauret
A dich — e puei va signo ;
Après es remenat
A soun premier estat,

Estat que, quauco fes,
Mai de l'entiero annado
Noun si mòu d'ounte èu es
Coumo uno armo daunado,
Li pourgènt pèr un trau
De pan e d'aigo un pau.

Touto fes, tau patir
Noun li soun qu'amouretos,
Car, quand li fau venir,

Au juoc deis estiretos,
Bramo coumo un vedèu
Qu'es menat au masèu !

E n'a bras ni tendoun,
Muscle, cambo ni veno,
Que Minos lou leiroun
Noun fasse dounar peno,
E pauvo noun aura
Tant que rènnoun dira.

Dount Minos oustinat
Nouvèu mau li fa faire,
Entro qu'a counfessat
Soun maleirous afaire :
Subitamen escrich
Es tout ço qu'èu a dich.

Adounc lou fa tournar
Tout roumput sus la palho,
E Minos d'assemblar
Touto sa leirounalho,
Qu'à drech ou bèn à tort
Li debanon sa mort.

Après aver counclus,
Cascun à la siéu modo,
Ou que siege pendut
Ou mes dessus la rodo,
Li vèn un capelan
Metre la crous en man.

Alouro lou pauret,
D'uno fàcio transido,
Es menat au gibet
Pèr i finir sa vido,
Leissant tous sei parènts
De sa fin mau-countènts.

Mai sa fin noun vaudrié
Lou péu d'uno escoubeto,
Si lou pacièn n'avié
Davans si la troumpeto,
Pèr faire soulament
Ausir soun testament.

Subit lou vielh Caroun,
Grand pilot de la barco,
Pèr mens que d'un ceiroun
Soun esperit embarco,
En leissant eis aucèus
Soun cors e sei budèus.

Vela de nostre infèr
La terriblo misèri ;
Sié d'estiéu ou d'ivèr,
Noun manco tau tempèri ;
E pòu mordre soun det
Qui passo lou guichet.

Bèn vrai qu'en presoun
N'i'a mai d'uno centeno
Que pèr dèutes i soun,
D'autres eisènts de peno,
Lous quaus qu'asi s'envan
Dón jour au lendeman.

Mai un tau lendeman
De mi noun vèn encaro,
Car sèt meses de l'an
Passon justamen aro
Que iéu siéu presounié
Dins aquest pijounié.

E coumbèn que Plutoun
E Dono Prouserpino.
An fach à Beladoun

Tousjours bono cousino,
Toutosfes m'es avis
Que pres siéu dins lou visc.

Car, quaud moun courassoun
Si souvèn de la chiero
Qu'ai fach dins Avignoun
E dela la ribiero,
Lou jour si passo pau
Que noun siege malaut.

Mai fau que dedins iéu
Enclàvi la paciènço,
Esperant que moun Diéu
Mi doune delieurènço :
Après l'ouscuritat
Vèn puei la claritat.

Acò n'es trop segur,
D'ounte un pau mi counfouorto,
E noun pòu lou malur
Durar à-n-uno pouorto...
Mai pèr sourtir d'eici,
Fau de Diéu la merci.

Aquéu es bèn urous
Que pòu passar sa vido
Luen de talos doulours,
Vivènt à sa bastido
En touto libertat,
Quand n'aurié que de lach.

Amariéu mai cènt fes
I viéure de salados,
De cebos ou d'alhets,
Que de perdris lardados
Estènt dins la presoun,
Luen de moun Avignoun.

Dins lou libre de Belaud, *Obros e rimos prouvensalos*, aquelo coumplancho es seguido d'aquest quatrin :

Bon Diéune, si jamai mi vési dins Prouvénso
Ou embé lous amis tournar dins Avignoun,
Sara bèn penchinat e mist lou coumpagnoun
Que mi fara passar cènt pas fouoro Durénso.

La vilo d'Avignoun revèn à tout prepaus dins li vers que Belaud faguè dins sa presoun, n'en veici qu'auqu'un rapugò :

Noun si passo de jour que n'agi souvenènso
De tant de bons amis que soun dins Avignoun.

Mi sèmblo que jamai la terro dóu Sant Paire
Noun veirai !

Mai la plus grand doulour qu'en presoun mi fa guerro
Es lou mourtau pensié de la Papalo terro
Que mi nafro lou cor coumo s'èro un espiéut.

Subre-tout m'es de-fèr n'aver vist lei doucetos
(*li ch'atouno.*)
Dins lei prats d'Avignoun dire cènt cansounetos
E dounar, d'un trach d'uei, à quaucun lou martèu.

Davans que lou mes pàssi,
Sarai dins Avignoun e si veirai la fàci
D'uno que de bèutat n'a tout un plen panié.

S'uno fes siéu sourtit dóu claus de Prouserpino
E que pouesque arribar un cop dins Avignoun,
De prim saut anarai troubar moun coumpagnoun
Qu'es estat amoureux coumo mi de Claudino.

Moun eicelènt Hurbin, que dira ma mestresso,
Tant lèu qu'elo veira intrar dins Avignoun
Tant blafard, mourtinèu, soun doucet Beladoun !

A LA MIGNARDO VILO D'AVIGNOUN :

Vilo de proumessioun e dóu cèu benurado,
Vilo de tout soulas e gloutouns passo-tèms,
Vilo que comme un uou siés pleno de tous bèns
E que l'alme Jupin de sa man t'a pausado !

G. D. M.

— Qu'es acò ? Qu'es acò que l'on entarro pèr lou faire vièure.
— Es lou fio que couvo soute li cèndre.

LI MESSOURGUIÉ

l'a dos meno de messourguié : Li messourguié mau-disènt e mau-valènt — dangierous e mespresable — et li messourguié plasènt e galejaire, que si messorgo fan tort en degun. Moun ami Palunet èro d'aquésti.

Palunet — amor que vous ai di soun noum — èro l'ome lou mai besuquet, lou mai delicat que se pousquèsse vèire, en fèt de mangiho. Lou gibié, falié que fuguèsse tuia de fres ; li pèis, falié que bouleguèsson encaro ; quand sa femo ié fasié couire uno cousteleto, la viravo, la reviravo e la sentié dès minuto avans de l'entamena. Eh ! bèn, aquel ome tant besuquet e tant delicat, fasié crèire en tóuti qu'avié manja de reinard, de lùri, de rat d'aigo e touto meno de sôuvagino.

Ah ! pèr dire li messorgo, èro un mèstre !

Countavo li causo simplamen, naturalamen em'uno mimico perfèto. Loucalisavo bèn soun sujèt ; citavo li noum d'aquéli qu'èron esta temoui dóu fa que racountavo — toujours de gènt qu'èron mort, lou boujarroun ! o qu'avien quita lou païs — e'mbelissié soun raconte de detai particulé que fasien passa li messorgo li plus grosso coume uno letro à la posto.

Un vèspre, encò dóu barbejaire, un disié qu'avié manja de chin, un autre de loup, un autre de moustelo...

« Iéu, faguè Palunet, ai manja de tout acò, mai tout acò vau ni l'agnèu, ni lou vedèu. Pamens, ço qu'ai manja de plus marrit dins ma vido, es de lesert.

— De lesert ! ié faguèron, avès manja de lesert ?

— Coume vous lou dise. Un an — i'a long-tèms d'acò — travaïavian à à Masèlli. l'avié Manjo-dindo, Chico-bouso, Cambe-en-l'èr emé iéu : erian quatre. Aquel an, i'avié, davans la granjo, uno taulo de faiòu qu'èro pleno de lesert ; jamai se n'èro tant vist. Un jour, lou pastre, un espèci de piemountés, diguè :

— Voulès que n'en faguen uno sartanado ?

— Uno sartanado de lesert ! faguerian tóuti, mai lou lesert se manjo ? es-ti bon ?

— Es bon ! disès ? Avès jamai manja de granouio ? Eh ! bèn, es eisa-tamen coume la granouio.

— Vague pèr uno sartanado de lesert ! diguerian. »

Un matin, lou pastre aganto soun bastoun, vai à la taulo de faiòu, e, pin ! pan ! sus li lesert. Dins dès minuto n'aguè tuia uno dougeno, gros o pichoun. Quand aguè fa sa casso, ié coupè la tèsto e li pato ; lis espeié coume se fai di granouio e li boutè dins la sartan. Fricassa emé de bon òli, sentien pas marrit, e lou pastre si lipavo rèn que de li senti.

Quand nous serviguèron aquéu platas de lesert, me prenguè coume un tremoulun. Lis aviéu vist mort ; i'aviéu vist coupa la tèsto ; lis aviéu vist espeia e bouta dins la sartan, e, pamens, me semblavo toujour que lis anave vèire courre subre la taulo !

— E lis atrouverias bon ?

— Ai jamai rèn manja de tant marrit ! Uno car flasco, fadasso, pudènto !... »

En disènt acò, fasié coume se soun cor se sòulevavo. Aurias di qu'anavo rèndre si tripo rèn que de n'en parla.

« E lis autre, coume lis atrouvèron ?

— N'i'aguè que lis atrouvèron bon. Lou pastre n'en mangè pèr lou mens sièis à sa part. Iéu, n'en mangère uno cueisso, e n'aguère proun. Fau vous dire que la manjave pas voulountié... »

E Palunet s'arrestè sus aquéu mot en escupissènt coume se soun cor se sôlevavo mai.

S'avié di tout simplamen qu'avié manja de lesert, res l'aurié creigu ; mai aquéu « me semblavo toujours que lis anaye vèire courre sus la taulo » ; aquelo « car flasco, fadasso, pudènto » ; aquéli sôlevamen de cor. aquel escupissage e subre-tout soun cop de la fin : « Fau vous dire que la manjave pas voulountié », dounavon à soun raconte un tal èr de verita, que tóuti lou creiguèron.

Pèr dire uno messorgo, es pas difficile, mai, de la faire avala — quand es un pau grosso — es pas lou mestié de tóuti.

AUZIAS JOUVEAU.

LIUEN DI CIÉUTA...

Liuen di ciéuta, liuen dóu chafaret di carriero,
Amigo, coursejen un sounge simple e dous ;
Se li camin escur d'avau soun asardous,
Sus la cimo di mount la lus es sèns pariero.

Dau ! vène. T'apprendrai 'mé lou cours di sesoun
Quouro se fai l'òulivo o maduro l'amelo
E que chasco meissoun porto sa joio em'elo.
Quand saren las, faren pauso sus lou gazoun.

Couparen de genèsto d'or dins li garrigo,
Jalousaren la mort óudourouso di flour ;
Lou campèstre enclausis l'aire de sa belour,
Lou trafé di ciéuta douno que l'enterigo.

Toujour pèr orto, ensèn, de l'aubo à l'escabour,
Veiren dóu renouvèu l'ufanouso espelido ;
Quand l'estiéu fruchara, n'en faren la culido ;
L'autouno nous dira l'espèro di labour.

Quand fougara l'ivèr emé si grand niue bruno,
Nous caufaren coume de vièi dins lou fougau,
Mai lèu repartiren i bèu jour, sèmpe gau :
Lou raive dins li coumbo emé l'oumbro degruno.

De-longo i meinagié charraren prouvençau
E viéuren, trefouli, nosto idilo rustico ;
Tóuti li mot grana de parladuro antico
Soun flour de pouèsio, e ma bouco li saup.

En despié de la nèu, en despié dóu jalibre,
Dóu ruscle de la plueio o dóu fiò di dardai,
Sus lou camin di fado e dins l'ort di pantai
Te dirai moun amour e mi cant de felibre :

Cant filiau en l'ounour di mèstre venera
De nosto lengo d'O, de la maire Prouvènço,
— Bimbarolo d'enfant e raive de jouvènço,
Que laisson dins la vido un remèmbe sacra.

Quand la terro en Abriéu cargo sa raubo novo,
Trepren dins li prat pèd descaus, péu mouvènt,
Sout l'aubre souloumbrous que boulego lou vènt,
En Avoust trovaren l'acuei fres dis arcovo.

Liuen di rumour e dins lou trelus dóu campas,
Emé l'aire dóu fen e lou murmur di ramo
L'aureto boufara dins nosto amo que bramo
Un eissame amistous de calamp e de pas.

E pièi, au calabrun, quand lou cèu s'enmantello,
Esblégussènt lis èr d'un giscle de belu,
Meissounié de rai d'or e de pantai alu,
Ligarai pèr ta som uno garbo d'estello.

Tira de *L'Amigo rustico*.

JAN PAGAN.

— Qu'es acodè ? Qu'es acò que dison : Se *lavès* me lou dounés pas,
mai se *lavès* pas dounas-me lou.

— Es lou bacèu de la bugadiero.

AU TRIBUNAU

Lou juge de pas au paciènt :

« E mounte demouras ?

— Demore emé moun fraire Jaque, moussu lou juge.

— E voste fraire Jaque ounte demoro ?

— Emé iéu, moussu lou juge.

— Sarnipabiéune !.. E demouras tóuti dous ?

— Tóuti dous ensèn, moussu lou juge. Acò's acò. Demouran ensèn. »

LOU CASCARELET.

L'AMOUR VENGUÈ...

Noun pensavo à l'amour,

Cantavo tout lou jour

E dourmié dins lis iero

Li nine d'estiéu ; l'ivèr,

Anavo bèn cubert

Cassa dins li broutiero.

Uno chato venguè,

La veguè, la vouguè,

L'aguè touto expandido.

Acò durè long-tèms,

Belèu tout un printèms

E pièi... bello finido.

Es ansin de l'amour,

Di pouèmo e di flour

Pèr lou soulèu cremado.

Un rai lis ennoublis

Pièi toumbon dins l'oublit

E s'envan en fumado !

F. FAVIER.

VERS LOU BARBIÉ

Tistet, qu'a lou su lisc coume lou vèntre d'uno dourgo, e Lafana qu'a 'no tignasso coume un lioun, s'atrouvavon ensèn encò dóu barbejaire :

« Sabe pas coume fas pèr avé 'no tant bello tignasso ! faguè Tistet à Lafana ; e de-que ié metes ?

— Ço que ié mete ? respoundeguè Lafana : moun capèu, lou jour, e moun bounet de coutoun, la niue. »

LOU CASCARELET.

LOU ROSE A PARIS

Apoustrofo i Parisen !

Dequé diable an vougu me dire :
— Voulès noste Rose, amoundaut ?
Crese qu'un brisoun vougués rire,
Bèn ! mis ami, sias pas malaut !..

Perqué ié sias, dóu meme viage,
Pèr vous escarrabiha 'n pau
E faire veste escoubihage,
Poudrias empourta lou mistrau !

Pèr faire vòsti niue pu bello
E desennebla voste cèu,
Poudrias prene nòstis estello
E carreja noste soulèu !

Poudrias, dins vòsti plano nuso,
— S'acò d'aqui geinavo res, —
Ié 'stalouira nosto mar bluso...
Aurias sèmpe de pèis bèn fres !

Poudrias veni querre à la palo,
Tout ço qu'encanto e que fai gau,
Nòsti perfum, nòsti cigalo,
Nosto Camargo e nòsti brau !

— Prenès, prenès flume e aurasso,
Mar e soulèu, tout ço qu'avèn,
De qu'avès pòu, poudrés en plaço,
Nous manda quàuqui curo-dènt...

— Mai, digas, quand vosto encountrado
Aurié tout pres, o Parisen,
Sarié-ti fiho de l'Elado ?
Di Grè sarias-ti li felen ?

Anas, anas, marchand d'arlèri,
Que sigués jouine o sigués gris,
Sarés pu lèn au çamentèri,
Que lou Rose d'èstre à Paris !

.....
Car èi bèn nostre aquéu bèu flume,
Tout nostre e li gènt dóu Miejour
Ié tenèn, nàutri, coume au lume,
Au grand lume que nous fai jour.

I'a d'an e d'an qu'a fa sa maire
Dins la coumbo qu'a pres soun noum ;
De noste vièi sòu es l'amaire
E l'endrudis de si poutoun.

La naturo a tira si raro,
Cresès-lou, pèr l'eternita,
Soun aigo lindo nous es caro
Autant que nosto liberta !

Éu tout de long sus soun passage,
Es l'abéuradou di ciéuta,
Es la vido pèr li vilage,
— Pèr la Prouvènço uno bèuta !

E li viloto blanquinello
Que lou veson coure adraia,
Dedins soun oundo clarinello
Sèmpe volon se miraia.

Adouñ gardas tout ço qu'es vostre,
Aiours poudès vous abéura ;
— Couquin de sort ! lou Rose es nostre...
Nostre lou Rose restara !

J. MARCELLIN.

Mèino, lou 10 de setèmbre 1911.

— Un avugle lou veguè, un sourd l'entendeguè. De qu'es acò ?
— Uno messorgo.

LA CICOUREIO

CANSOUN

Auzias JOUVEAU.

Mt de valso. Moderato.

The musical score is written on five staves in a 3/4 time signature with a key signature of one flat (B-flat). The melody is simple and rhythmic, typical of a waltz. The lyrics are written below the notes. The first staff begins with a treble clef and a key signature change to one flat. The second staff has a *tenuto* marking above the first note. The third staff has a *tenuto* marking above the last note. The fourth staff has a *rall.* marking above the first note, a *1^o tempo.* marking above the fifth note, and a *rit.* marking above the ninth note. The fifth staff continues the melody.

Couneissiéu, dins moun jouine tèms, Uno per- leto de cha-
touno ; Mens fresco qu'elo es, au printèns, La roso qu'au sou-lèu bou-touno.
Sarié trop simplò au tèms que sian, Cor mou-des-te è-ro sa liéu-rè-io,
E li jou-vènt la cou-neis-sien Que pèr La Ci-cou - rè - io.

La rescountrère, vous dirai,
Un bèu jour que veniéu dis Angle ;
Se ço que dise es pas vrai,
Que la messorgo, vuei, m'estrangle.
M'easouvèn qu'èro un fres matin ;
Lou vènt siblavo dins li lèio,
E dins li prat de Pontmartin
Anavo i cicourèio.

Vestido d'un coutihoun blu,
E d'un casot coulour de flamo ;
Sis iue jitavon de belu
Que vous metien lou fiò dins l'amo.
Èro divin soun trecana :
E pèr sa maire — pauro vièio —
Em' elo, alin, sariéu ana
Cerca de cicourèio.

N'aviéu pas dourmi de la niue,
Pensave sèmpe à la pichoto,
A soun bèu rire, à si bèus iue,
Quouro, en sautant de ma litocho,
Dins la carriero, en Avignon,
Vesiéu ma fado de la vèio :
Taio primeto e pèd mignoun...
Vendié de cicourèio !

Sèmpe lisqueto coume un iòu,
Emai fuguèsse enca jouineto,
La chato, bravo coume un sòu,
Amavo gaire li sourneto.
E de ié traire un mot galant,
Se, de-fes, vous prenié l'idèio,
Vous respoundié, tout en filant :
« Quau vau de cicourèio ? »

Vaqui qu'un jour desparguè,
La veguerian plus pèr carriero,
E dins la vilo se diguè
Qu'en terro d'Arle èro masiero ;
Que, femo d'un riche pelot,
Alin, au país de Mirèio,
Avié de fen dins sis esclop...
Adiéu li cicourèio !

UN COUNSÈU

Un matin, Castagnòu èro en trin de bourra sa pipo, davans sa porto, quand sa vesino ié diguè :

« Eh ! bèn, Castagnòu, n'anan tuba-v-uno ?

— Eh ! coume vesès, pèr n'en pas perdre l'abito.

— Ai legi, aièr, sus lou journau qu'aquéli que fumon vènon pas vièi.

— Eh ! bèn, iéu que voudriéu resta jouine, countuniarai de fuma, e meme lou dirai à ma femo que voudrié que fumèsse plus : acò la fara chanja d'avis.

LOU CASCARELET.

TOUT ÇO QUE LUSE ES PAS D'OR

La rose n'est pas une plante mellifère.

(Les Traités d'apiculture.)

PÈR VITOUR JEAN, *Counseïé generau
dei Bouco-dôu-Rose.*

Sus lou verd tapis dôu jardin
Tout esmargaia de floureto,
L'abiho espoussavo, lisqueto,
L'or de soun courselet bloundin.

« Vène ! disié la girouffado,
Vène, qu'à boudre, dins ma flour,
Trouvaras tóuti lei coulour
Que sus mei sorre soun pintado ! »

« Vène ! disié lou tulipan,
Esvasant l'arcèu de seis anco,
Dins ma courolo que s'escranco,
Ti prouvesi d'amaro-pan. »

« Ah ! vène ! que siéu la pu bello,
Disié la roso, e ma bèuta
Counouis d'autro rivalita
Que dins lou cièl l'ardènto estello ! »

Ensin parlavon : jaussemin,
Blavet, margarido e ginèsto
E, cado flour li fasié fèsto
Tout-de-long de soun blound camin.

E l'abiho, à sa fantasié,
Tau parpaiejo un rai de flamo,
De l'uno e l'autro esbuvié l'amo
Desdegnant que lou bèu rousié.

« Mai que t'ai fa, gènto bestiolo,
— Disié la roso tout en plour —
Siéu-ti plus la rèino dei flour
Que risoulejo à l'eigagnolo ?

« Lou clar poutoun que mi fas tort
Ah ! vène lèu mi lou semoundre ! »
E l'abiho de li respoundre :
« Noun ! tout ço que luse es pas d'or !

« Eiçabas, cadun fa sa plego,
Malur pèr qu n'es bouen en rèn,
Sa vido n'es qu'un long segren
E lou bouenur, Diéu li lou nègo !

« Tau la Vènus dei blanc mamèu
Ounte l'a ges de la, pecaire,
Tu, bello roso, sabes plaie,
Mai dins ta flour l'a ges de mèu ! »

J.-B. ASTIER.

Pèr reüssi dins la vido, fau èstre fin e agué l'èr bèsti.

PÈR LOU JUBILÈU PROUFESSOURAU

DÓU DÓUTOUR GRASSET

(*Abriéu, 1912*)

Dóu proufessour Grasset, dóu medecin illustre
Que, desempièi dès lustre,
Mestrejo à Mount-Pelié
Celebren l'amistouso e savènto beillié.

F. MISTRAL.

L'ESTRANGIÉ

Lou long Bretello de Castèu-Reinard èro d'aquéli qu'amon rèn tant qu'uno bono riboto, subre-tout quand ié vèn à pount sènso rèn cousta.

Lou brave Bretello èro ami de longo toco emé lou sartre Mihaut de Sant-Roumié, qu'eu amavo de trata sis ami e de ié faire vèire qu'avié un oustau coussu e que se fasié bono vido dins soun meinage.

Pèr la voto de setèmbre, que s'atrovo juste au tèms benesi di merinjano, di lèbre e di perdigau, moussu Mihaut avié l'abitudine de faire quàuqui counvidacioun. Madamo Mihaut desirouso peréu de bèn trata sis estrangié, sabié qu'un jour de voto se dèu metre tout plat pèr escudello. Tambèn, uno semana à l'avanço, la bravo meinagiero se despoutentavo pèr escura li peiròu, faire lusi li candelié, pièi esplumassa, larda e farci lou gibié, que bèn au fres, esperavo la brocho.

Mau-grat lou trassimage qu'aquélis envitacioun dounavon e li paraulo cènt cop dicho sièis mes à l'avanço entre marit e mouié : « Dequé poudrian bèn metre de bon e de requist aquest an pèr la voto ? » Moussu Mihaut, qu'èro sa manò, disié toujours en fasènt si counvidacioun : « Vous trataren sènso façoun coume de parènt e d'ami ; poudrés resta à dina emai à soupa, nous desrenjaren de rèn, faren coume s'erias de l'oustau. »

Lou long Bretello qu'avié pòu qu'un jour o l'autre Moussu Mihaut faguèsse coume disié, ié respoundeguè : « Poudès coumta sus iéu, sarai bèn voulountié di vostre lou matin emai lou vèspre. Sabe qu'emé lis ami e li parènt n'èi pas besoun de se geina, mai iéu, ve, moun brave Mihaut, siéu pas fièr, me fai rèn que me trates coume un estrangié.

LOU CASCARELET.

Jaquet racountavo que, tout-bèu-just gari de la fèbre tifouïdo, agué un transport au cervèu. « Mis ami, disié, siéu resta trento jour sènso counèissènço... e, aro, n'ai gaire mai ! »

À SEVERINO

De-fes, quouro l'Indian coursejo li bisoun,
Uno aiglo, tout-d'un-cop, s'aubouro enjusqu'i nivo;
L'Indian quilo d'ourguei, — que la benedicioun
Dôu Grand Esperit vèn de parèisse — e s'abrivo.

Un matin, coursejant, iéu mai, li biôu feroun,
Dono, au desert ounte cremo la flamo vivo
De moun pantai, veguère ansin rada l'eigloun,
L'aiglo de lus, sus ma Prouvènço renadivo :

Car plus aut que l'eigloun vosto voues au cèu-sin,
Enauro li pouèto, o Dono, e sus lis alo
De voste engèni clar, l'Ome i prado eternalo

S'envolo, pivela pèr lou Verai divin,
E lou gardian, leissant s'encourre la bouvino,
Grâci vous, a touca l'Ideau, Severino !

F. DE BARONCELLI.

I Santo, 11 de mai de 1912.

LOU FESTIN DEI COUGOURDOUN

Amount, palisson lis estello,
Revihas-vous : es lou matin
E lou gai soulèu se desvèlo :
Amount, palisson lis estello...
Partèn noumbrous pèr lou festin !

Sus lou camin, dins l'auro puro,
S'aude lou piéu-piéu dôu quinsoun,
Tout en montant, à la frescuro,
Sus lou camin, dins l'auro puro,
S'envolon d'alègri cansoun.

Davans la glèiso, sus la plaço,
Es lou règne dóu cougourdoun :
N'en trovarés de touto raço,
Davans la glèiso, sus la plaço,
De loungaru 'mé de redoun.

Cadun chausisse e cadun piho
Au mouloun ço que li counvèn :
Bosso, galetto o meravibo,
Cadun chausisse e cadun piho
Chaudèu, nougat o cacho-dènt.

A l'oumbro, souto de la tèndo,
Es un bisbi qu'es sènso fin ;
Si béu, si ris, si fa merèndo,
A l'oumbro, souto de la tèndo,
Parton bougneto e bescoutin.

Se permetès, bèlli fiheto,
Quouro vèn l'ouro dóu retour,
S'encalaren toui en brasseto,
Se permetès, bèlli fiheto,
En cantant de refrin d'amour.

'Mé nautre, pourtaren à Niço
Coumo un sourire de bèu tèms,
Souto dei mai ùmbli téulisso ;
'Mé nautre, pourtaren à Niço
Uno alenado de printèms.

JÓUSÈ GIORDAN,

Niço, pèr l'Anounciado de 1911.

Un Prouvençau, di pus encagna, disié : « Iéu renega ma lengo ?
Jamai ! Amariéu miés l'avala ! »

N'en vaqui un que, d'après soun dire, tenié mai à sa lengo qu'à sa
vido. Ero-ti felibre ?

LA SOURNETO DE LA VIGNO

(Educacioun poupulàri.)

— Ma grand, iéu me languisse... Digas-me 'no sourneto.

— He ! me vènes en òdi : se te vos pas languì, mete uno pèiro à ta pòchi e vai-t'en faire d'iue à-n-uno cato borgno.

— Digas-me 'no sourneto, vous que n'en sabès tant !

— An, te n'en vau dire uno... Uno fes i'avié 'n ome qu'en curant soun pouciéu trouvè 'n denié.

— E 'm' acò ?

— Em' acò d'aquéu denié croumpè 'no vigno, uno pichoto vigno.

— E 'm' acò ?

— Em' acò, aquel an, li vigno aguèron la marrano e ié restè, d'aquelo vigno, rèn qu'uno maiouliero.

— E 'm' acò ?

— Em' acò, quand me parlas ! d'aquelo maiouliero ié restè pièi qu'uno souco, uno marrido souco !

— E 'm' acò ?

— Em' acò d'aquelo souco, vai-te faire lanlèro ! ié restè plus qu'un vise.

— E 'm' acò ?

— Em' acò, d'aquéu vise, ié restè plus qu'un rasin.

— E 'm' acò ?

— Em' acò, d'aquéu rasin, ié restè plus qu'uno alo.

— E 'm' acò ?

— Em' acò, d'aquelo alo, ié restè qu'un sengloun.

— E 'm' acò ?

— Em' acò, dóu sengloun, ié restè plus qu'un age.

— E 'm' acò ?

— Em'acò, d'aquel age... d'aquel age, te dise, rèstè plus qu'uno gouto.

- E 'm' acò ?
— *Manjo merdo quau escouto !*
— Oh ! ma grand, de m'avé atrapa coume acò !
— Saras pas tant curious, ansin, un autre cop.

LOU CASCARELET.

- Qu'es acò ? Qu'es acò qu'au mai es caud au mai es fres ?
— Ei lou pan que sor dóu four e l'idu que sor dóu quiéu de la galino.

PÈR LOU MARIDAGE

DE MADAMISELLO BERTO RUAT *

L'auceloun que sèn ié batre sis alo
Se tèn paupitant sus lou bord dóu nis
Lèst à s'envoula... Lou cor ié fernis....
E s'envolo dins la lus matinalo.

Ansin, casto enfant, rèino de belour,
Vestido de blanc e cencho de nerto,
Coume l'auceloun, vous envoulas, Berto !
Luen de voste nis basti dins li flour.

Coume un ange erias la douço coumpagno
Que fai de l'oustau un sant Paradis,
Erias lou bonur sèmpre cantadis,
Un rai de soulèu daurant la campagno.

Erias l'île pur que flouris l'auta,
Erias lou pu bèu de tóuti si libre
Ounte legissié, lou paire felibre,
Ço qu'es la bèuta, ço qu'es la bounta.

* Tira de l'*Aubre en flour*, en preparacioun.

Mai l'enfant grandis e lou Printèms passo,
La flour devèn frucho : es la lei de Diéu,
Es la lèi d'amour sus tout ço que viéu,
Sus ço que la vido em' elo tirasso.

E l'ouro d'ama pico à voste cor.
Lou nòvi galant vèn que vous espouso,
E dins si poutoun, o Berto, vous nouso
Em'un long fiéu d'or que rump qu'à la mort.

Que Diéu benesigue, enfant, vosto vido :
La coumenças vuei. L'amour lou mai pur
Empligue lou nis emé lou bonur
De gais auceloun la gènto espelido.

E que tout-de-long sigue mai que mai,
Vosto bello unioun, lou pus bèu di soungé.
E que jusqu'au bout de voste vièiounge,
Bèu nòvi, sigués coume au mes de Mai.

VALÈRI BERNARD.

LOU SAUMOUN

Se vèi plus gaire d'aquéli gros manjaire coume dins un tèms ; belèu n'i'a encaro, iéu n'en counèisse plus ges. Avèn tóuti entendu li raconte que fan li vièi sus li riboto d'autro-fes. Un tau, dison, jouguè de manja tant de cano de boudin e gagnè ; un tau mangè touto la dindo dóu tèms que la cousiniero anavo tira de vin ; un tau mangè pèr farceja tóuti lis iòu qu'uno masiero adusié au marcat pèr li vèndre e leissé que li crevèn dins lou panié ; e tant d'autre e d'autre...

Iéu m'ensouvène dóu long Brancai de l'Ilo, que ié dison Curo-lume pèr faus-noum, bèn tant èro gourmand. Aquéu s'èro bessai jamai leva

la fam despièi qu'èro nascu ; estènt pichot, dison, manjavo la mecho di calèu e lipavo l'òli dóu lume, l'escais-noum i'avié resta.

Un an devié i'agué un grand repas à Sant-Martin, qu'èro l'oste en renoum de L'Ilo (e l'es encaro); s'esperavo quaucun de la costo-pleno : un prefèt belèu, vo bèn un deputa, à mens que siguèsse un menistre. Lou repas èro coumanda pèr uno vinteno de moussu dóu gros grun sènsou coumta la menudaio que lis acoumpagnavo. Coume de juste, l'oste s'èro mes en quatre pèr s'aprouvesi de bònï causo e faire ounour à la renoumado de soun oustau ; avié mes coume se dis la grando poulo dins la pichouno. Quau vous a pas di que lou matin dóu grand jour dóu repas, pataflòu ! arribè 'no biheto bluio que desdisié tout. Lou persounage venié de tounba malaut en routo, bèn tant malaut que i'avié en Avignoun tres medecin à soun entour e qu'èro au lume signa. Adiéu ma taulejado. — L'oste se sarié proun còunsoula : la voulaio, li giblié, li viandaio tout acò se counservo e se n'en pòu aprouficha en fasènt faire meiouro vido i viajaire, sènsou coumta que dina coumanda es degu, e que de gènt coume se déu se farién proubablamen pas tira l'auriho pèr desdaumaja l'oste de si frès. Mai èro lou peissoun que s'anavo degaia ; i'avié 'n Saumon de sièis pan de long qu'èro adeja cue e alounga sus uno brassado de juvert.

« Quente daumage, se diguè l'oste de leissa degaia un moussèu parié. Fau que lis ami lou taston e sara pas di que dins moun oustau se laisse perdre un viéure tant requist.

E zóu ! partiguè pèr souna la rampelado de sis ami e li counvida à veni manja lou Saumoun.

I'a de fes que tout viro d'à-rebous. Lis ami de l'oste quau èro deforo, quau èro malaut, quau èro dins lou malur ; se n'atrouvè qu'un que siguè de lesi e que diguè pas de noun ; mai justamen amavo pas la peissounaio... Entre que veguè lou pèis espetaclous frounsiguè lou nas...

« Escouto, diguè à l'oste, comtes pas sus iéu pèr manja d'acò, cre-

barièu pulèu de fam. Sabes quau te fau ana querre se vos que toun peïssoun se mange, es Curo-lume. »

E zôu ! mandèron lèu souna aquel avangouli de Brancai.

Aqueste acabavo sa soupo de faïdu rouge.

« N'ai plus gaire fam diguè, pamens, farai pas à-n'aquéli moussn l'escorno de dire de noun. »

E se carrejè à Sant-Martin.

— Mi bràvi moussu, diguè en s'entaulant finissièu de dina, mai pèr vous faire plèsi manjarai un mousseloun emé vautre ; e pièi m'an di que i'avié un Saumoun ; n'ai jamai manja d'aquéu bestiari e m'agrado de saupre lou goust qu'acò pòu agué. »

Après quàuqui bachiquello pèr se metre en trin, entamenèron lou peïssoun e n'en tirèron à Curo-lume un taioun que curbissié touto la sieto ; dins un vira-d'iue aguè esquiha, pièi, zôu mai ! un segound taioun autant gros s'enanè rejougne l'autre ; pièi tourna-mai un lambias prenguè lou meme camin, e, zôu mai ! l'oste curbissié la sieto d'un autre lambias. En fin finalo de taioun en lambias restavo plus que la tèsto dóu peïssoun em' encaro un bon tros de poupo.

« Ah ! ço, messiés, venguè ansin Curo-lume, es proun pas marrit aquéu pèis, dise pas de noun, pamens sènte que ma fam s'envai e fau leïssa encaro un pau de plaço.

— E perqué leïssa de plaço, badau ? ié diguè l'oste, t'ai pas counvida pèr que t'entournes emé l'estouma cura coume un brusc. Bèu un bon cop e, zôu ! de courage, acabo-me aquéu peïssoun.

— Eto mai, moussu, se me gounfle de peïssoun ounte metrai lou Saumoun tout aro !

— Coume as di ? lou Saumoun ? mai malurous n'en manges dempièi miecho-ouro, lou sabiés pas alor ?

— Ah ! pèr aquelo, faguè Curo-lume, quau diàüssi m'aurié di acò ? E iéu que me reteniéu, que restave sus ma fam. Quand me parlas d'aquéli mot de l'autre mounde ! Un Saumoun aquéu peïssoun ? léu cresiéu qu'un Saumoun èro lou pichot d'uno Saumo, coume dirias un

pichot ase femello, uno saumeto ! Que tron de pas disque se sarié mes dins la tèsto que i'aguèsse de pèis bateja ansin. »

E, zóu ! tiro dins sa sieto ço que restavo dóu Saumoun, la tèsto emé un tros de poupo gros coume lou bè d'un ase.

TALERASSO.

NIS DE MÈU

PÈR J.-H. FABRE.

Lou vòu d'abiho matiniero,
— Un rai d'aubo dins lou courset —
Davalò en vounvounant, dis iero
Vers uno faisso d'esparsset.

Dins li flour roujo — qu'avié set, —
Bèu la melico e la fresquiero,
Lou vòu d'abiho matiniero,
Un rai d'aubo dins lou courset.

I frejau de la badassiero,
Escound, pièi, en un gènt niset,
Sa culido, siavo pòussiero,
Mèu que nous n'en lican li det,
Lou vòu d'abiho matiniero.

J. MONNÉ.

UNO FEMO AVISADO

Lou drole de Madeloun de Rasclet, Peyrounet, se devié marida dins la quingenado emé la pichoto Nenò de Rabot.

Madeloun de Rasclet jito pas soun lard i chin, nimai lis estaco pas 'mé de saucisso, e quand fai uno despènso fau que soun argènt fugue bèn emplega.

Un matin, pamens, emé soun drole d'un coustat e la pichoto Nenlo de l'autre, s'enanè encò de Moussu Clapié l'orfèbre, chausi l'anèu novviau pèr la bravo pichoto Nenlo que se tenié plus de joïo e qu'aquéu jour èro poulido coume un ièu.

Madeloun vouguè bèn faire li causo, e vague de cerca quicon de bèu e de soulide. Quand n'aguèron trouva un qu'anavo à la pichoto e qu'èro à soun goust, Madeloun diguè à soun drole : « Aro, Peyrounet, assajolou, tu peréu.

— E perqué voulès que l'assaje, ma maire.

— Moun enfant, fau èstre un pau avisa en aqueste mounde. Prene-lou que vague bèn en tóuti dous, coume acò se deveniés vèuse, lou proulitariés e t'espargnarié de n'en croumpa un autre....

La pichoto Nenlo restè 'n moumen candido, sènso saupre s'anavo rire o ploura... mai pièi — èro talamen countènto emé soun Peyrounet, aquéu jour, que riguè soun pu poulit rire de chatouno à la vièio Madeloun de Rasclet.

— « Longo-mai ! te dure aquéu rire, ma bello chato », ié digué Moussu Clapié, en maniero de gramaci.

LOU CASCARELET.

— Sièis passeroun sus une branco lou cassaire tirè, n'en tuiè dous. Quant n'en restè ?

— N'en restè ges : li quatre autre avien ficha lou camp.

SINFOUNÏO MISTICO

I

Au grandaras councert de la maire naturo,

— Epoupèio sublimo e pouèmo d'amour —

Eternau gramaci que touto creaturo

Largo piousamen vers Diéu soun Creatour,

Vène apoundre ma voues e sus moun calamèu

Vène vous dire un cant novvèu !

Tout passo, tout s'envai, tout mor e tout degolo ;
Au garagai dóu tèms tout davalò plan-plan,
La forço di droulas e la bèuta di drolo
Se passis e s'envai dóu jour au lendeman
Coume uno bello flour que jalo la plouvino,
O que lou sòuleias rabino !

...Mai li voues autouroso e li bèlli cansoun,
Lis inne e li moutet dis aucèu dins l'aubriho,
Li plagnun de la mar, l'ourlamen di lioun,
Lou tron feroun que peto e brounzis e grasibo,
E lou canta de l'ome emé soun teta dous,
Sèmpe demoron majestous !

... Venès, pople ! venès ausi la sinfounio
Que mounto dins l'èr siau em'un sant estrambord,
Lou mèstre musician a mes tant d'armounio,
Tant d'engèni, de biais, de goust dins sis acord,
Que siéu demoura mut !... e dedins la calamo
Veici ço qu'ausiguè moun amo :

II

« Siéu bèn grando disié la mar,
Moun reiaume a ges de frountiero,
E lou founs de mi toumple amar,
Recatarié de raço entiero ! »

Mai lou bon Diéu
Es pu grand que iéu ! »

Uno chatouno afrescoulido,
Enfenestrado aquéu matin,
Disié : « Segur siéu bèn poulido,
Quand ai ma raubo de satin,
Mai lou bon Diéu,
Es pu bèu que iéu !... »

Dedins la sèuvo sòuvertouso,
Un lioun bramavo sa fam
E sa voues terriblo, esfraïouso
Disié : « Siéu fort !... e pièi, subran,
Mai lou bon Diéu,
Es pu fort que iéu !.. »

Un tron petè dins la niuechado,
En samenant pertout l'esfrai.
E dins lou brut di labechado
S'ausiguè clanti tournamai :
« Iéu pecaire siéu
Lou resson de Diéu. »

III

« Es pus aut que nous, disien li mountagno !.. »
Trempe de l'eigagno,
« Es pu grand que nous, disien li campas,
Lou Diéu de la Pas ! »
« Es pu bèu que nous, disien lis estello
Trelusènto e bello. »
... « E nous-àutri, sian, disien flume e riéu
Li mirau de Diéu ! »
« Es pu bèu que nous disien li floureto
Dedins la pradeto !.. »
A tout lou poudé, mai soun pu bèu Doun,
Es lou sant Perdoun !...

IV

Alor d'amount di nivoulasso
Di nivo sourne e pensatiéu,
Uno voues, clamè, grandarasso :
« Pamens, o pople, aquéu bon Diéu,
Aquéu Diéu qu'es tant bon, aquéu Diéu qu'es tant dous
L'avès mes sus la crous ! »

ANTÒNI BERTHIER.

LIS ANGUIELO

Lou jour que levèron lis aigo de la sorgo, coume se fai tóuti lis an pèr faire lou netejage e li reparacioun, lou grand Guihaume anè manda quàuqui cop de rias dins un gatouioun que i'avié en dessouto dóu pont di Counfino.

Lou rias, que d'uni apellon l'*ourrias*, lou *resau*, o l'*arrapo-tout*, es ço qu'apellon en Avignoun un esparvié. Es em'aquel engin, que porto sabe pas quant de noum, que Guihaume pescavo.

Au proumié cop d'esparvié, aduguè uno anguielo grosso coume lou pichot det. Guihaume la prenguè e la meteguè dins uno saqueto de telo qu'avié penjado au còu.

Au segound cop d'esparvié, i'aguè mai uno anguielo, pas pu gros que la proumiero. Guihaume la prenguè e la meteguè peréu dins la saqueto.

Au tresen cop, l'anguielo siguè pariero i dos autro. Acò durè un moumen : chaque cop d'esparvié adusié sa bèsti, ni pu grosso ni pù pichoto, tóuti coume lou pichot det. « Quento sartanado ! disié Guihaume. Es proubable qu'aquéu bestiàri fai de nisado coume li lapin e lis aurai tóuti agantado au nis. Daumage que siegon tant pichoto, veguèn se poudriéu prene la maire, sarié 'n meiour moussèu qu'aquéli bestiolo que sèmblon de fiéu... » Em'acò mandè mai l'esparvié, e n'aduguè 'no autro... toujours pariero.

« M....! faguè en trasènt la bèsti apereila, n'avèn proun coume acò e tène pas à ço que n'en soubre, noste catoun poudrié s'estrangla en manjant li rèsto... »

Alor venguè pèr nousa lou saquet, mai, pecaire, i'avié rèn dedins. L'anguielo — car èro toujours la memo — passavo pèr un pichot trau que i'avié au caire de la saqueto e resquihavo dins la sorgo. Guihaume avié pesca toujours la memo.

LOU CASCARELET.

— Quento differènço i'a entre la tourre d'Eifel e uno cigaro ?

— Me sèmblo que la diferènço es proun grandò pèr la vèire subran : la tourre d'Eifel fai mounta e uno cigaro fai *de cèndre*.

FAUTO TAPADO

L'enfant de Pelegrin, lou pichot Michelet,
Que cour dins si vuerh au — emai dins li rigolo, —
 Soun paire lou mando à l'escolo,
 Encò de mèste Jansoulet.
 I'a croumpa, segound la coustumo,
Cartable, caièr, libre e plumo e porto-plumo,
 'm'un escritòri de cristau,
 Pèr quand dèn escriéure à l'oustau.
Sabès que lou dijòu, o dón tèms di vacanço,
 Lou mèstre chaplo de travai
 Is escoulan, sus l'estiganço
 Que fugon rejoïn un pau mai
E qu'oublidon pas trop ço qu'an après... Vrai.
 Sènso aquèu siuen, pàuri champino !
 Mi bèus ami, quente varai !
 Que de mau-fa, que de rapino,
 Que de nis gasta, lèi de Diéu !
 Que d'aubre afoundra, tout l'estiéu !
 Que de soulié dins li roubino
 E que de capèu acrouca !
 Que chaple de blodo is espino,
 E de founs de braio arranca !

Adounc dijòu matin, coume sa maire Jano,
'Mé soun pichot cabas, èro anado cerca
 Au marcat,
 Poumo d'amour e merinjano,
 Liéume pèr faire la bajano,
 E que l'ome èro à l'ataié —
 Subre la pouncho de nòn-v-ouro, —
Michelet, noun pousquènt demoura mai au lié,
 Badaïo, s'eigrejo, s'aubouro,

S'abiho, davalo descaus,
Sausso (o bèl apetis de la santo jouinesso !)
La mita d'un pan de gounesso
Dins sa holo de la tout caud,
Bèn espoumpido e remoulido.
Aquel obro majo coumplido,
L'escoulant souajo à soun pres-fa :
La tauolo èro encoumbrado, éu vai au pulèu fa,
Sor soun caïèr, lou duerb, l'estènd sus lou cartable,
Lou cartable sus lou sofa,
E, sus 'quéu burèu gaire estable,
L'encrié. — Mèste Michèu grifouno d'agrouva.
Mai lou pichot escarava
N'avie pancaro, dins si libre,
Après la grandò lèi que regis l'équilibre,
E, pèr manco d'avisamen,
Uno man trop auto o trop basso,
Un trop rapide mouvemen,
L'encriero fai lou viro-passo,
E la sausso, — pensas, — ié restè pas dedins.
La bello crespino floucado
E la cuberturo picado
N'en aguèron bello espouscado
« Ai ! ai ! ai ! moun paure badin,
« Auras pulèu toun ensacado
« Qu'uno fiolo de muscardin,
« Se 'n-cop ta maire saup aquelo !.. »
Sousclavo lou poulit bloundin,
Quand tout-d'uno se duerb la porto dóu jardin.
« Agués pieta, moun Diéu, es elo ! »

Lou mignot subran perd lou sen :
Soun paure cor tremolo e sauto,
Devèn blave soun ten rousen.
Pèr escoundre sa grosso fauto,
Se i'assetè dessus, lou nèsci, di dos gauto,
Ansinto, rèn n'apareiguè.

Mai la menèstro encaro fresco
D'un pau pertout s'espandiguè ;
Sus lou founs di braio empeguè
Dos bèlli pajo d'arabesco
Que semblavon facho au pincèn.

Sabès ço qu'es l'iue d'uno maire :
En vesènt soun drouloun candi coume un aucèu,
Dins soun nis un aucèu couvaire,
De cuja que l'avié quicon, Jano istè gaire :
« Bèn mai, que fas aqui, Michèn ?
« Sèmblès tout estela, viro-te 'n pau de caire. »

Quand auè vèire lou tassèu,
« Santo de Diéu ! mi bèlli braio ! »
Crido en trasènt li man au cèu.
« N'iaurié pèr l'escracha contro aquelo muraio,
« L'espóuti en milo moussèu !
« Quand parlas de la coucaraio ! »
Subran vèi dóu sofa lou jus negre que raio ;
Alor de chasco man l'ajounglant dous bacèu :
« Mai de-qu'as fa, pichot poucèu ?
« Faudra te metre li mouraio
« Quouro voudren te mestreja ?
« Se vous farié pas desbarja !
« Sabe pas quau me tèn ! Gus, vai-l'en ! Arri ! àrri !
— Mama, l'ai pas fa 'sprès. — Noun, lou paure, au countràri !
« Vai te coucha, vai, maufaras,
« E s'as fam quand te levaras,
« Poudras dansa davans l'armàri.
« Es pèr faire un parié pasis,
« Bóumian, qu'encò de Fountaniero
« A faugu te croumpa noun sabe quant d'òutis ?
« S'escribes d'aquelo maniero,
« Segur, n'as pas besoun de plumo, ni d'encrié :
« Lou ferrat tant te serviré. »

UNO OURO DE TÈMS

Marineto èro uno meinagiero coume se n'atrobo gaire. Dins soun oustau, tout lusissié coume un mirau. Li maloun de sa cousino e de sa salo à manja èron propre coume un rasin ; aurias manja au sòu.

Un jour, uno de si vesino ié diguè : « Sabes que ti maloun soun poulit ! De-que ié passes, pèr li faire veni coume acò ? »

E Marineto ié respoundeguè : « Es bèn simple. Ié passe uno ouro tóuti li matin ».

LOU CASCARELET.

LOU MOUNGETOUN

Souto lou porge dóu moustié,
An adu dins un gros panié
Un pipadoun rose que crido ;
Avien escri sus d'un papié
« Quau l'a fa ié doune la vido. »

Lou chapitre s'acampo, ai ! las,
Pèr sourti d'aquéu marrit pas.
Juron tóuti pèr sant Cesàri,
Qu'acò lis arregardo pas :
Van pas courre encò di patàri !

Lou priéu a di : « juren pas tant,
Pièis-que Diéu nous mando l'enfant,
L'abariren de la de fedo ;
Se nous quito quand sara grand,
N'aura pas cousta de mounedo.

Hoi ! bono maire ! aquest nistoun
S'atrovo qu'ès pas un garçoun !
Es uno poulido fiheto
Poudra pas faire un moungetoun
Fau que lou manden i moungeto. »

Li moungeto l'an pas vougu
E l'ourfanèu es revengu.
« Basto ! a fa lou priéu, mi bon paire,
Ço qu'avèn di sara tengu
Pièis-que es l'abit que fai lou fraire. »

Sege an de tèms lou moungetoun
A trachi, gai coume un quinsoun.
Cantavo, servissié la messo.
Ero un ange e soun blanc mourroun
Jitavo de rai d'alegresso.

Cade jour devenié pu bèu ;
E li vièi paire sounjarèn
Se rementavon trop ço qu'èro ;
Ié charravon dous coume mèu
E n'avien perdu la preguiero.

Lis àutri mouge, li jouvènt,
Avien bèu saupre rèn de rèn
E prega Diéu, l'amo afougado,
Toumbavon dins lou languimen ,
Abriga pèr li pantaiaado.

Lou priéu que recounèis soun tort
E vèi que lou diable es trop fort
Quouro a 'no femo pèr ajudo,
Vòu lèu escounjura lou sort
Pèr rèndre au moustié sa quietudo.

« Fraire, es l'ouro de nous quita !
— De-qu'ai fa ? — Rèn. La verita
Es que siés qu'uno bravo fiho
Que prenguerian pèr carita
E t'avèn servi de famiho.

Mai aro Diéu me punirié,
Se te gardave au mounastié ;
Fau que t'envagues i moungeto,
Qu'eici courrèn trop de d'angie
Emé ta caro poulideto.

Pèr toun rire e pèr toun canta,
Pèr toun aproche, as encanta
La juvenesso e lou vieiounge ;
As fa fugi l'ousterita
Qu'es la normo di pàuri mounge. »

La fiho s'es messo à ploura :
« Moun paire, voudriéu demoura
Atendès un pau, que rèn presso.
Voste mounjetoun mourira
Liuen dóu nis de sa pichounesso. »

La Gourgueto-Sanary.

Lou sant ome plouro tambèn,
Mai quand Diéu parlo, escouto rèn :
E l'endeman, la mistoulino
Es intrado dins lou couvènt
Di bràvi dono Bernardino.

Las ! Sièis mes venien de passa,
Que lou vièi priéu di descaussa
A reçaupu 'quelo biheto :
« Vosto mounjo vai trepassa,
Vous voudrié vèire, la paureto. »

Part quatequant. Tre que l'a vist,
L'enfant se reviéudo e sourris :
« O Santo Vierge benesido,
Pode mouri ! » Mai lou priéu dis :
« Braveto, revène à la vido.

La clastro — acò se vèi bèn proun —
Sara jamai ta voucacioun
Qu'ères trop gaiò e cantarèllo,
Meme quand fasiés l'ouresoun.
Ta mort nous sarié trop crudèlo,

Garis e revène au moustié.
Loujaras encò dóu masié.
Vai ! Soun drole tardara gaire
A te prene per sa mouié
E viéuras proche de ti fraire.

RAVOUS GINEËTO.

— Fiho, veici coume passaras li vihado :
Au mes de mars faras pas mens d'uno fusado,
Au mes d'abriéu faras à peno uno bullado,
Mai quand veiras de mai li niue courto veni,
Tu barraras la pouerto e anaras dourmi.

LOUGICÒ DE FEMO

Dins l'afaire de sièis mes, la Besuqueto perdegue soun ome e un bèu miùu que valié, lou mens, vue cènt franc.

Quand soun ome mouriguè, la Besuqueto plourè forço, — i'avié qu'un parèu d'an qu'èron marida — mai quand soun miùu virè li quatre ferre en l'èr, plourè, certo, encaro mai ! De-segur, si regrèt èron pas de memo naturo pèr l'ome e pèr la bèsti, car, la Besuqueto amavo forço soun paure Besuquet, e, mau-grat que siguèsse restado vèuso jouino, e que fuguèsse poulido e revihado, avié jamai fa parla d'elo. Mai basto ! La pauro femo se desoulavo e se derrabavo li péu. Talamen qu'uno vesino, que l'èro anado vèire pèr un pau la counsoula, disié à sa noro :

— Iéu, pode pas còmprendre que, pèr uno bèsti, uno femo se bouté dins un estat parié ! A perdu soun miùu ! Segur qu'es un gros malur, mai quand a perdu soun ome, a bèn mai perdu !

— Teisas·vous, anas, que sabès pas ço que disès, ié faguè la noro. D'ome, n'en retrouvera un quand voudra que ié coustara rèn, e pèr ramplaça lou miùu que vèn de perdre, faudra que vueje un gros saquet d'escut.

LOU CASCARELET.

Calignaire d'oulivado,
Calignaire de qningenado.

POUIAN *

Pouian, brès de ma tèndro enfanço,
Que t'estèndes long das roucas,
Counserve pèr tu l'amistança
Qu'avièi quand restave à toum mas.

* Paulhan, vasto prouprieta près d'Anduze.

Lou Tèms qu'amaïso la soufrènço,
Embé sa daïo e soun péu blanc,
Poudra pas de ma souvenènço
Escrafa toun noum qu'aime tant.

L'enfànço es pas res qu'un bèu sounge,
Un pantai agradiéu e dous,
Que tout es fres coumo l'aigage,
Que tout es semena de flous...

Devistè perqu'amount la ruïno
Abourido del castelas *,
Embé sa tourre que doumino
E blanquejo pèr lous bartas.

Coumo l'aimave toun grand éuse !
A soun oundro ai souvènt trepa ;
L'aurage gimblavo las séuse,
Qu'el jamai si clinavo pas.

Embé moun chi partièi à coussou,
Degaja coumo un ca-chainet ;
Quant de leco ai fa pèr la brousso
Pèr prene lous passerounet !

Al printems, 'tre que lou siéulaire
Nous pourtavo tourna l'espèr,
Seguissièi toujour lous daïaire
A toun bèl prat qu'èro tant verd.

De sous magnan la magnagnuèiro
Mandavo la bono sentou :
Lous espinchave d'ouro entièiro
S'estrema dedinc lous coucou.

* Lou castèu de Tornac,

Pièi, passa lou tèms das floureto,
Tant-lèu que veniè la calou,
Foulastrejave dinc l'aigueto
Fresqueto o lindo del Gardou.

Quanto benurouso semano
Que la das vendémio ! Pertout
L'on vesiè pas pèr ta grand plano
Que troupo de travaïadou :

Èro un bonur, uno amusetto,
De coupa lou negre alicant,
L'uiado, la bloundo clareto,
Lou muscat rous apétissant.

De-fes fasièi lou carrejaire,
Cargave descos e semau ;
Ajudave també lou paire
A trouia dessus lou tinau...

Tout me risié ; m'es avis qu'ère
Dinc un pichoutet paradis,
Mai un jour, pechaire ! seguère
Bèn fourça de quita toun nis.

Pouïan, que tant me sabiés plaïre,
Toun efant s'enanè doulènt ;
Li semblavo qu'èro uno maire
Que laissavo 'qui pèr long-tèms...

1911.

ULRIC COSTE.

Quand panoucho fai bugado,
De cènt an fai pas soulèu.

Femo que coui e fai bugado,
Es miejo-folo o enrabiado.

FERRE TOUMBA

La chato de Bassaquin èro estado troumpado pèr un manescau.

Lou manescau la voulié plus. « La chato de Bassaquin ! Quau voulias que prenguèsse acò ? »

Lou paire e la chato fasien forço brut. Menaçavon lou manescau e quand l'enfant venguè, la Bassaquino lou pòurtè dins la boutico dóu manescau, e ié leissè. Fauguè que la pouliço l'oublijèsse à lou repren dre. Mai, basto ! Un jour que Bassaquin travaïavo long d'un camin, veguè un droulas qu'aubouravo un ferre de chivau à mita gausi.

— Porto-lou au manescau, ié diguè Bassaquin, te n'en dounara dous sòu.

— Vous, sias un galejaire, ié respoundeguè lou drole, — qu'èro pas tant bèsti que ço que n'avié l'èr — quand vosto chato n'en toumbè un, de ferre, lou pourterias au manescau, mai lou manescau vous l'aguè lèu rendu !

LOU CASCARELET.

L'ÓULIVIÉ

« Pamens de l'oulivié, matrassa pèr l'ivèr,
Gisclo vuei tourna-mai de bèu sagatun verd. »
(F. MISTRAL.)

Dins uno ouro de fèbre e d'ardènt pantaïage
Davans mis iue veguère un aubre espetaclous,
Immènse e fantasti, curbènt] de soun fuiage
Li mar, li terro e li vilage
Enai li serre nivoulous !

Dóu fin bout de l'Espagno i counfin de la Perso
S'estendien li rampau d'un gigant òulivié :
Soun pège èro tanca dins Roumo, au bord dis erso,
Mai en dessus dis oundo perso
Soun front toucavo li nevié.

Vers la Grègo de Diéu, prefumado mestresso,
Soun aspre racinun anavo alin teta
Lou neitar e lou la mai dous qu'uno caresso,
Emai la sabo d'Alegresso
E d'Armounio e de Bèuta !

Soun brancage nousous, de la sagesso antico
Escampavo i nacioun l'eterno refflamour :
Li pople esbalausi pèr sa voues pouëtiro
Escontavon d'ou grand cantico
De-longo brusi la rumour.

E l'aubre avié sèt branco à fueio palinello
Que curbien di Rouman l'empèri universau ;
Mai la plus prommierenco e la mai vierginello
Acatavo à soun oumbrinello
Lou clar païs di prouvençau.

Noste grand oulivié dins l'aigo di calanco
D'amount se miraiavo autant qu'en un mirau,
E sus nòsti campas leissavo en avalanco
Toumba sa frucho e si flour blanco,
Quand boufavo lou vènt-terrau.

Noste pople, nourri em' aquelo ambrousio,
Amavo de canta, pan-pan, au tambourin :
En Arle, en Avignoun, à-z-Ais e dins Marsiho
De nosto jouïno pouësio
L'Ecò redisié li refrin.

L'abiho de l'Imète alor poutounejavo
Lou soucas prouvençau de l'oulivié latin ;
La ciga'o amourouso aqui cansounejavo
E de-longo voulastrejava
Dins li flour de noste jardin.

O Prouvènço, o ma maire ! o tu que fasiés flòri !
Ounte es toun estrambord ? ounte es toun esplendour ?
Un barbare es vengu pèr estrepa ta glòri,
Raubà ti plus richi belòri
E sagata ti troubadour !

Un sourne nivoulun, buta pèr lis aurasso,
A davala dóu Nord coume un escabot fèr ;
Lis uiau enlusien la chavano negrasso
De si belugo rouginasso
Coume la goulo de l'infèr !

La terro tremoulavo au brut de la tempèsto
Que fasié dins lou cèu fugi lis esparvié ;
L'endoulible a passa... mai, dins l'orro batèsto,
Un tron a pica sus la tèsto
De nosto branco d'oulivié...

La branco s'es duberto ansin qu'uno mióugrano
Em' un long crussimen à vous tranca lou cor,
Esparpaïant alin si fueio emé si grano
Dins nosto tèbo mar mejano
Que gingoulejava d'escor...

Plouras, o parpaioun ! vosto flour es daiado !
O troubadour, plouras, plouras coume d'enfant !
Lis estello en lagremo au cèu se soun chanjado
E nosto ardènto souleïado
Es roujo, vuei, coume de sang !

Lou rampau, aclapa pèr l'aspro mourdeduro,
A pendènt sèt cènts an pati de soun mau-sort ;
Lou tèms n'a pas gari sa founso blessaduro,
E desempièi que lou mau duro
Se cresié que l'aubre èro mort.

E pamens Diéu aguè pieta de soun auvàri :
Amo lou dur plantun que soun fuïage amar,
Lou soustavo àutri-fes au camin dóu Calvèri
E douno d'òli au santuàri
Pèr la vihòlo de l'autar.

Li bourroun verdoulènt dins noste païs libre
Regreïon mai-que-mai, vira vers lou matin ;
E, de-longo atentiéu i cansoun di felibre,
Tournamaï dins l'aigo dóu Tibre
S'abéuron li pople latin !

La branco d'oulivié tourna-mai enmantello,
Coume un vièsti d'argènt, nosto terro de Diéu ;
La flour de pouèsio embaumo la jitello
Que sèmblo beïsa lis estello
'Mé si sagatun renadiéu !

— Dins uno ouro de fèbre e d'ardènt pantaïage,
Ai vist davans mis iue un aubre espetaculous,
Immènse e fantasti, curbènt de soun fuïage
Li mar, li terro e li vilage
Emai li serre nivoulous !

BRUNOUN DURAND.

Ais de Prouvènço, 5 de setèmbre 1912.

L'ERPURÒ

*Noun es Aspic, ni Dragoun plen d'excès,
Ni Basalic, Coucoudril ou l'Erpuro,
E n'i a de tous plus tristo mourdaduro
Que dau serpènt que si noumo proucès.*

(LOU DOUN-DOUN INFERNÀU.)

Qu'es aquèu bestiàri que lou vièi pouèto Belaud de la Belaudiero
noumo l'*Erpuro* ? Nous parèis uno courrupcioun poupulàri dóu latin
Harpya e dóu francés *Vampire*.

G. D. M.

LOU BON DIÉU, LOU PASTRE E LOU GARDIAN

Un jour d'ivèr, lou Bon Diéu se passejavo long di bos dóu Riège, en Camargo, abiha en paure. Rescontro un pastre que fasié la radasso à la calo d'un mournen.

— Pourrias pas, sant ome, lou Bon Diéu ié vèn au pastre, m'ensigna li gaso pèr m'agandi jusqu'à Fielouso ?

Lou pastre duerb li parpello à mita, badaio, s'estiro e, sènsò s'au-boura, emé lou pèd, ié faire vèire à Noste Segne la direicioun que dèu teni. E lou Bon Diéu repren sa vïo.

Un pau pu liuen, capito un gardian qu'assetta entre dos mato d'en-gano, adoubavo uno coungislo.

— Pourrias pas, sant ome, lou Bon Diéu ié vèn mai au gardian, m'ensigna li gaso pèr m'agandi jusqu'à Fielouso ?

— Oh ! que si fèt, fai lou gardian. E, s'aubourant, escampo sa coungislo, e, amistous, acoumpagno lou Bon Diéu jusqu'à la gaso de Nègo-Bidou. — Tenès bèn lou mitan, ié dis, que i'a d'abime en s'escar-tant. Quand sarés de l'autre bord, veirés uno gacholo dins lou levant e ié tirarés dre. Fielouso sara davans vous, dins la liuenchour, e rèn pòu plus vous arresta.

— Bèn gramaci, gardian, faguè lou Bon Diéu.

E, se virant, alounguè souïn bastoun en disènt :

— D'abord que li pastre soun tant feiniant, li pastre caminaran d'à-pèd, e li gardian anaran à chivau !

BERICLE.

A bono bugadiero,
Noun manco pèiro à la ribiero.

Cabrit d'un mes,
Agnèu de tres.

LA TINO

Lou mounde es la tino dôu sort,
Es la tino fatalo
Ounte, liogo d'age, la mort
De si bato brutalo
Escracho, chaucho laid e bèu,
Bon e marrit, frucho e cruvèu,
Pèr fin qu'emé 'no trounadisso
Giscle un rai de bon vin de l'orro mescladisso.

J -H. FABRE.

LA SAUSSO DE CACALAUSSO

Eitant amave la sausso de cacalauso autre-tèms, eitant aro la pode plus senti. Vous atrouvarés que touto fes e quanto que soupave encò de Chaucho-espino, me regalavo d'unó sausso de cacalauso e me n'en lipave li det. La femo de Chaucho-espino a nourri ma pichoto darriero e se pòu dire que l'a revengudo, la prenguè anequelido e secado, pecaire, coume un escaudènt e nous la rendeguè touto redouno e moufleto coume un pan de meinage. Acò 's de causo que se podon pas paga à soun pres, tambèn sian resta despièi coume de parènt; dos o tres fes l'an ié mene la pichoto e soupant tóuti ensèn; es uno fèsto pèr nàutri emai pèr éli. Sabien qu'amave li cacalauso e, coume lou disieù tout-escas, tóuti li cop n'avié un bon platos.

« Coume fasès, diguère un jour à la femo de Chaucho-espino pèr faire aquelo sausso tant goustouso? N'ai tira tres sieto e l'atrove de mai en mai entrasènto; s'èro pas que me farié mau, n'en tirariéu encaro uno. En-liò mai se n'en manjo d'ansin. A l'oustau, la femo, qu'es pamens pas marrido cousiniero, pòu pas arriba à l'ajougne tant bèn.

Déurias me douna voste secrèt, se n'avès un, la femo e iéu peréu vous n'aurian bèn d'obligacioun.

— Fau demanda acò à la memèi, moussu, me respoundeguè Nenio (ié dison Nenio à la femo de Chaucho-espino), es la grand qu'acò regardo.

— Eh ! bèn, veguen, memèi, diguère alor à la grand que mutavo pas e que trissavo un croustet de pan de meinage emé sa ganacho desdentado. Baias-me-lou voste secrèt, sarié bèn dóumage de lou leissa perdre.

— Moun brave moussu, me rebequè la vièio, n'ai ges de secrèt anas ! fau ma sausso coume tóuti fan ; tant soulamen que iéu, vès ! un moumen avans que la menèstro siegue cuecho en plen, eh ! bèn, (es eiçò belèu moun secrèt), i'apounde dos o tres boucado de crousto de pan bèn mastegado emé quàuqui nose. E vaqui tout. Gràci à Diéu ! emai n'ague plus que mi dos dènt de davans coume li lapin, trisse pas mau la crousto encaro ; me fau un pau mai de tèms, mai pèr faire bono cou-sino fau pas èstre pressado. »

Lou creirés belèu pas, mai es despièi aquéu jour que pode plus vèire la sausso de cacalausos qu'amave tant.

LOU CASCARELET.

RAMOUN BERENGUIÉ

(1112)

Ramoun Berenguié, comte de Prouvènço,
Sage d'esperit e bèu de jouvènço,
A mès lou país, dóu Martegue à Vènço,
Au pountificat.

Despièi qu'es rèi d'Arle, es de remarca
Que di quatre caire à nòsti marcat
Lou mounde s'abrivo, e qu'esperluca
En Arle s'agrado.

Ço vèn que de nòu la vilo es parado,
 E que tout flouris, dins nosto encountrad
 De gnerro e d'emboui sieramen garado
 P'èr lou bon Ramoun.

De joio e de lus subre plano e mOUNT
 Plòu à bro, de l'aubo à soulèu tremount
 E lou pople urous canto, flourimount,
 La terro e si douno.

Que d'or barbela lou champas raïouno
 D'espigo li gènt trenon de courouno
 P'èr Ramoun que, vuei, vèn de Barciloun
 Vers Arle lou Blanc.

Car l'an vist qu'un cop, soun prince abelan,
 Quand de l'Aragoun au bràn semelan
 Venguè cueïe i Baüs lou rire galant
 De Douço, la Bloundo.

Vèn em'eu, d'aiours, la Baussenco moundo
 E dis Arlaten l'estrambord desboundo
 De pensa que van devista sus l'oundo
 Sa Rèino e soun Rèi.

Sus lou bord dóu Rose, au pountin, se vèi
 La sorre de Douço, uno flour d'elèi,
 Faneto : à l'entour d'elo, sus li quèi,
 La troupo preclaro

Di segnour galés; pièi, sus si quitarro
 Assajant d'èr nòu dins la tintamarro,
 Li gai troubadour que faran tout-aro
 Court à Berenguié.

Ve ! sus li rempart qunte fourniguié !
l'a 'n fube de mounde en aut di clouquié,
Sus li tèule e sus li falabreguié,
Que guèiron li velo.

A l'ourizoun larg subran se desvèlo,
Dins lou siau tremount, uno caravello
Que sèmblo uno nau de raive e pivello
Lis iue e li cor.

Coume un ciéune blanc sus un bacin d'or,
Vogo sus lou Rose au coumun esfors
Di brun marinié que remon d'acord
E dóu vènt que driho.

A la pro, bèn lèu, la foulo destrio
Douço que, davans sa blouso Patrio,
Gounflo d'esmougudo emai d'alegrìo,
Plouro e ris ensèn.

Rei, darrié la rèino, esmougu tambèn,
Ramoun que regardo emé gau soun bèn :
Terro prouvesido e pople plasènt...
La barco arenado,

Faneto que tant amo soun einado
E que noun la vèi que pèr pountanado,
S'acourso e ié fai milo poutounado.
O lou bèu moumen !

N'i'a de cridadisso e de picamen
De man, quand lou rèi, que l'on tèn d'à-ment,
S'ageinouio e beiso amoureuxamen
L'arlaten rivage !

Se n'ausis de vivo ! emai d'oumenage,
Quand Ramoun s'aubouro e qu'à l'entourage
Dounant si dos man à quicha : « Léu gage,
Ço dis, que jamai

Rèi a couneigu de pus dous esmai
Que li qu'en moun cor à-n-aquesto ouro ai !
Urous siéu ; urous signés, longo-mai ! »
Autant-lèu la foulo,

Lou cor coumoula de joio e sadoulo
Dóu chale secret que dins l'aire coulo,
Foulamen se rounso à la farandoulo ;
E d'eici, d'eila,

Quouro rèino e rèi soun encastela,
S'ausis de pertout rire e viroula
Souto lou clarun d'azur e de la
Dóu cèu estela.

MARIUS JOUVEAU.

Tira de « *La Cansoun d'Arle.* »

— Quto diferènci i'a entre lis ami e li dindouletto ?

— Pèr aquelo l'atrove pas. Nàni, l'atrove pas.

— L'atroves pas ? Eh ! moun ome, es parço que n'l'a ges : lis ami
fan coume li dindouletto, fugisson quand vèn lou marrit tèms.

LI MESSOURGUIÉ

Un jour, au cagnard, — èro dóu tèms que lis iòu se vendien 45 sòu
la dougeno — se parlavo dis iòu e di galino.

« Nautre, diguè Moulinet, avèn uno galino que nous toumbo sa
dougeno d'iòu tóuti li semano. N'en fai un lou matin e un lou vèspre
sièis jour à la filado ; se pauso pièi un jour e recoumenço.

— Eh ! bèn, nautre, diguè Poupeto, n'avèn uno que noun soulamen
nous n'en fai que tres pèr semano, mai encaro poudèn pas li manja ni
à la coco ni en óumeleto.

— E coume vai ?

— Vai que li fai dur. Aquelo galino a lou sang talamen caud que
quand fai sis iòu soun kiue. »

LOU CASCARELET.

PÈR EN PAU MARIETOUN

Lou 4 d'avoust s'es'auboura en Aurenjo un buste à la memòri dóu valènt felibre En Pau Marietoun que tant faguè pèr la glòri de la ciéuta, en mestrejant li representacioun de soun teatre antique, emé lou goust e lou talènt que tóuti lis artisto, literatour o autre, ié reconneissien e amiravon en éu.

Moussu Leoun Berard, souto-secretàri d'estat i Bèus-Art, èro vengu presida la soulennita. Soun discours faguè counèisse qu'èro, en meme tèms qu'un menistre dóu gouvèr, un artisto e un escrivan d'elèi amant e coumprenènt la pouèsiò de nosto Prouvènço. Après sa recepcioun à la coumuno pèr lou Counsèu municipau presida pèr moussu Lacour, deputa e maire d'Aurenjo, lou courtege venguè au teatre antique. ounte, davans un publi mai-que-mai simpatique, aguè liò l'inaguracioun dóu buste dóu felibre representa emé grand talènt en pleno jouïnesso e bèuta.

La ceremounié coumencè pèr la musico de la Coupo Santo, Moussu Mounet-Sully que tant de fes fuguè aclama sus la memo sceno, legiguè uno letro toucanto de F. Mistral, loungamen aplaudido.

Pièi Valèri Bernard, capoulié dóu Felibrige, prounouciè un discours ounte glourificavo Marietoun coume meritavo de l'èstre pèr soun amour de la terro prouvençalo ounte avié trouva sis ispiracioun. Marc Varenne, secretàri dóu Presidènt de la Republico e ami de Pau Marietoun, faguè la remesso dóu mounumen à la vilo d'Aurenjo, e moussu Berard, aculi pèr lis aplaudimen de tóuti, aduguè soun tribut d'amiracioun « à l'ome que rendeguè i pèiro dóu Cièri uno amo vibranto, au Felibre qu'avié coumprés e ama li pouèto dóu Miejour, à l'umanisto que ressuscitè li grândis epoupèio antico. Enfin, au noum de l'amenistracioun di Bèus-Art. rendeguè pleno justïço au pouèto en quau Aurenjo devié lou reviéure de soun antico glòri. »

Moussu Lacour respoundeguè en gramaciant lou menistre e diguè que lou buste d'En Pau Marietoun, sarié glouriousamen plaça dins lou

jardin publi que toco lou teatre en reconneissènço de tout ço qu'avié fa pèr lou revieüre de l'art, e invouquè 'mé pouèslo e emoucioun l'amo dóu pouèto que devié se reviha aquéu vèspre pèr ausi li bèu vers que lou glourificavon.

Madamisello Roch legiguè alor uno ode amirablo de Joachim Gasquet e la plueio, que semblavo avé espera la fin de la ceremounié, estendeguè sus lou Cièri un velet gris en raport emé li sentimen douçamen atrista di noumbrous ami aqui present.

DICHO DÓU CAPOULIÉ

PÈR INAGURACIOUN

DÓU MOUNUMEN DE PAU MARIETOUN

Es uno gau pèr tóuti, es uno gau pèr nàutri, Felibre, de coumemoura vuei aquéu que fuguè, sa vido durant, coume uno arpo trefoulissènto i man de la Prouvènço, aquéu que, sènso lassige, noun aguè cèssò de glourifica noste grand Mistral e sa pleiado.

E pamens, l'emoucioun m'arrapo en pensant à l'ami, au fraire de cor, à-n-aquelo amo requisto envoulado vers lis Aliscamp d'ounte jamai degun se n'es tourna, partido à l'ouro ounte lis espèr anavon se realisa pèr elo, dins l'estiéu de sa vido risènto, emé la glòri pèr ourizoun e l'amour pèr demoro.

Car tóuti l'amavon. E s'erian encaro au tèms di legèndo flourido, uno legèndo i'aurié que lou representarié jouine eros vengu d'uno luencho Tulèio. Nouvèn Jaufre Rudel, la Prouvènço èro sa Melisendo, e n'es mort de l'agué trop bressado dins si bras.

A vint an un mounde novèu se desvèlo. Di nèblo de Lioun davalo lou Rose, — tau lou prince d'Aurenjo canta pèr Mistral — davalo aquéu flume grandaras. Davans éu la Prouvènço se duerb, calignairis e pre-fumado, risènto e cantadisso souto sis óulivié gris, dins l'esluciado de si planuro, dins lou miramen de sis ourizoun. Valènci, Avignoun, Arle, divesso courounado de toure e de perlo vestido ié pourgisson si bras. Li recounèis coume se recounèis la vesioun d'un sounge. Aquesto patrio, es sa patrio. Aquesto lengo sounanto e douço que pèr lou proumié cop restountis à soun auriho, sèmblo lou verbe d'Apouloun. Se creï de viéure uno vido novello en un país pasta de lus ounte tout s'en-

devèn armounlo, e lou vaqui pèr sèmpe pivela. L'enmascage es coumpli : L'ome blound dis iue blu touto sa vido restara enfada pèr la terro bloundo e lis ourizoun blu.

Aquesto lengo prouvençalo, l'estudiè 'm'uno ardour de jouvènt, anant à Mistral tout dre coume vers soun paire esperitau — (noste paire esperitau en tóuti) — ié liéurant un culte qu'èro d'adouracioun. Estudiè nosto lengo prouvençalo au poun de la faire siéuno, e se l'apropriè, n'en couneiguè tant founsamen li finesso e la sabour que pensavo en elo e que l'escriviè autant bèn, e belèu miéus que forço Prouvençau que la parlon, que l'escrivon, mai que l'estudion pas.

Ansin, prouvidencialamen venguè, se pòu dire, dins la coumençanço dóu Felibrige, au tèms urous d'Aubanèu, de Roumanille, de Gras, d'Ansèume Matiéu, couneiguè, visquè si vido d'estrambord e de nouvelun. L'idèio felibrenco, alor dins lou cruvèu — desempièi a counquista lou mounde, — l'idèio felibrenco avié pancaro passa li counfront de la Prouvènço, Avignoun n'èro lou cèntrè. E veici qu'un sero qu'assistavo, esmòugu, à-n-uno d'aquéli felibrejado improuvisado coume sabien lis improuvisa li mèstre, en pleno Bartalasso, de-long dóu Rose, souto lou cèu estela, nouvèu Sant-Pau la gràci lou touquè, cridè sa Fe novello, se jurant d'èstre l'apoustòli d'aquelo respelido d'uno lengo e d'un pople !

Tenguè paraulo touto sa vido. Es alor que foundegué la Revisto felibrenco. Aquelo revisto s'espandiguè rapidamen dins lou mounde letru, fasènt counèisse lis escrivan li meiour, noun soulamen de Prouvènço, mai de touto la lengo d'O, emé la pressentido dóu proudivious espandimen de l'Idèio felibrenco. E manto-un felibre dèvon sa renomado en deforo à-n-aquelo revisto que restara testimòni de nosto vido literàri trento an de seguido.

La « Cigalo di jardin » devengudo libro pèr la mort de Roumanille fugué la recoumpènso de sis esperfors, intrè dins noste Counsistòri, e de l'onguis annado pièi, em'avoudamen tenguè la cargo de cancelié dóu Felibrige.

Davans aqueste bust, retrove Marietoun tau qu'èro, Marietoun glourious d'éu-meme, à l'andare bounias, galejaire e fin, pu miejournau de fes que li gènt dóu Miejour, s'eisagerant, urous de n'agué l'acènt. E n'èro pas ju-qu'à soun lóugié quequejadis que noun aguèsse un chale e metegnèsse un picant de mai à si raconte plen de sau. Ero tout à la fes galés e caste. Respiravo la santa ; èro garru ; èro bèu coume un counquistaire, e Mistral ié dedicant un de si cap-d'obro « Lou lioun d'Arle », ié disié justamen aquéli vers que sabèn tóuti pèr cor :

Marietoun, bèu counquistaire,
Tu qu'as fa moun país tiéu,
E fas béure si cantaire
Dins li fèsto de l'estiéu....

Car n'es i fèsto de l'estiéu, dins aquesto ciéuta d'Aurenjo de quto faguè lou santuari de la Tragèdi, que falié lou vèire, petejant d'estrambord e d'esperit.

Mai pèr aquéli, rare, que lou counaissien bèn, soute l'estampo d'ome di foulo, quènti tresor d'intimeta ! Quènti finesso d'òusservacioun ! Quento amo esmógudo e douço ! Soun obro es touto espoumpido d'uno pouèslo sutilo, coume velado, car, mau-grat tout, èro l'ome de la prouvinço dóu Liounés à l'amo indeciso e sounjarello, coume perdudo en un fum daura qu'es pas la nèblo sournò dóu nord, e pancaro l'azur dóu cèu prefouns.

« *Ma vraie patrie à moi, disié, c'est la vallée du Rhône. A partir de Lyon, le fleuve n'appartient plus aux brumes, il s'est fait latin et semble se hâter vers la mer. Si je ne suis pas né en pays d'Avignon ou d'Arles, du moins je suis Rhodanien. Le Rhône a élargi pour moi la patrie natale : il me rattache, Lyonnais, à la terre élue de Provence. Lyon ne fut-il pas toujours la sentinelle avancée du Midi, le confluent modérateur des descentes du Nord.* »

Touto sa vido, se pòu dire, Marietoun jouguè lou role d'intermediari, utile e mai prefouns que ço que l'on pènsò, aquéu role de mediatour entre l'ome dóu Nord e l'ome dóu Miejour.

Gràci à-n-aquéu role de mediatour aqueriguè dins la capitalo un rapide ascendènt sus lis inteligènci desracinado dóu Miejour. Pariero i pu bèlli flour derrabado dóu terriair, aquélis inteligènci troubavon à Paris uno retirado, coume se la flour avié pouescu tourna-mai èstre plantado en un vas empli de terro dóu país. Aquelo retirado, aquéu vas de terro nourriguiero es-ti pas lou Felibrige parisen ? Founda pèr Maurise Faure, pèr Pau Arenò, Marietoun n'en fuguè president jusqu'à sa mort.

E n'en soun si fidèu, n'en soun si plus intimis ami que, respoundènt au desir dóu Felibrige tout entié aubouron vuci aqueste mounumen, testimòni d'estacamen e d'eterno souvenènço.

La recounaissènço es la noublesso dóu cor, es lou sorgènt dis acioun li mai puro. Pèr elo, counsciènt de noste devé au regard dis eros e di pensaire que pastèron nosto amo, sabèn la valour dóu mot Patrio, sabèn que la Patrio es sèmpre autant noblo, autant valerouso en cade

tros de soun terradou. La Patrio nous rend fièr d'èstre Prouvençau, Lengadoucian, Gascoun.

« *Nous croyons aux droits du passé, disié Marietoun, il a la force de l'exemple.... Tout se transforme mais tout s'enchaîne. Répudier sa province sous le faux prétexte de ne croire qu'à ce vague nationalisme moderne qui satisfait une indifférence égoïste, c'est répudier la raison. On ne s'attache pas fortement à ce qui est sans racine.* »

« *En un temps où le patriotisme se meurt, nous l'avons régénéré dans sa source.* »

E finirai en citant encaro de Marietoun aquesto estrofo lumenouso que s'endevèn tant bèn à noste gèst de vuei :

*Et toute apothéose est d'aurore suivie,
Et nous sommes de ceux qui célèbrent la vie,
Incroyants de sa vanité.
Dans nos villes qu'amour et génie ensoleillent,
Nous allons, éveillant les gloires qui sommeillent,
Pour un réveil d'éternité.*

VALÈRI BERNARD.

REMEMBRANÇO D'ANCIAN TÈMS

A F. MISTRAL.

Quouro me vau chala dins toun Museon d'Arle,
O Mèstre, aluque tout, sèmblo que tout me parle,
Me siegue familié, qu'ai viscu de soun tèm,
Esberluga, mis iue bèlon tout à-de-reng.

Me sèmblo qu'ai viha sout la grand chaninièu
Ounte li vièi disien, pìvelant la ninèu
Emai li fiellarello e lis ome au repaus,
De sourneto de fado en galoi prouvençau.

Subre lis escarfiò quand d'aubre entié cremavon,
Qu'à soun trelusimen, estan, couire brihavon,
Tout acò fasié gau : mai, pàuris estanié,
Pàuri record di vièi, vous an clastra 'u granié !

Ansìn di gerlo d'or, estampado e lusènto,
Ounte, lèsto, en cantant, li galànti jouvènto
Anavon querre, ensèn, l'aigo lindo au sourgènt...
Aro, raio à l'oustau : an plus lesi, li gènt...

Pamens, li galant vièsti e jouièu de Prouvènço
Agradièu, se n'en paro enca nosto jouvènço ;
Vou retraire Mirèio e gardo, gràci à tu,
Couifuro au fièr riban, capello e blanc fichu

Mèstre, n'as vist la fin d'aquéu tèms, e ta glòri,
Travessant tout, a fa coungreia ti « Memòri »,
As beni cachofio, viha 'mé lou calèu...
Ai ! las, aro voudrien faire lume au soulèu !

A. DE SEYNES.

E L'AUTRE ES UN COUIÒTI ?

En vilo d'Aubagno sian.

Pèr sant Aloi, entre que parèisson sus sei chivau poulidamen arnesca,
lei capitàn de la fèsto fau que fagon flouteja lei dous supèrbei drapèu
de la courpouracien ; es, acò, dins soun proutoucole !

Aquélei dous drapèu sedous, fres e poulit que-noun-sai, rèston à la
parròqui dóu cap de janvié à sant Sivèstre, mai doues fes dins l'an, pèr
sant Aloi d'estiéu emé pèr sant Aloi d'ivèr, la vèio de la fèsto, lei car-
retié van, coucardo au capèu, cerca lei bèus estendard que respèton
coumo la petito de seis uei, — un regimen ounouro pas mai lou siéu, —
e zóu ! toco, tambour ! lei saut e la joio desboundanto duraran plusiour
jour à-de-rèng.

Lou riche drapèu rouge e lou fin drapèu jaune e verd, toujours pre-
cedi dóu gaiardet enrama e flouca, toujours saluda dei gai richiéu-
chiéu dóu lifre e dei brounzimen dóu tambour, presidaran lei cavau-
cado, lei courso, lei taulejado, la vèndo dóu capitanàgi pèr l'an venènt

e tóutei lei manifestacien religiouso o noun de la fèsto : lei dous drapèu pouerton pinta lou grand sant Aloï, e sant Aloï, lou patroun venera, fau bèn que vegue tout.

Mai tout pren fin e la fèsto brusissènto dei carretié fa coumo tout.

Adounc, au darrié sero d'éstei fèsto bousinarello, lei bràvei carretié reprenon, un pau blet, lou camin de la glèiso e van pendoula tourna-mai lei supèrbeis estandard à la capello de sant Aloï.

Es eici lou bouquet de la fèsto, lou triouñfle dóu pouderaus patroun e davans soun cors sant qu'es aquí subre un pausadou tout adourna de flour embeimado lei bouen carretié dounon l'aubado, puei encaro uno aubado, e puei d'autro toujour. Oh ! lei mot melicous que li dien, à soun grand sant Aloï ! Oh ! lei bèllei pognado de bais que li mandon !

— Anen, encaro un còup, lei fifraire, e zóu ! toco, tambour !

Or, vous trouvarés que, dins l'estiganço bessai d'espragna sus la rèndo, sant Aloï a dins sa capello un autre estajan, lou grand sant Pèire, patroun de la parròqui. Dounc sant Pèire, quiha sus un segound pausadou qu'ournon soulamen dous vas de flour en papié, semblavo autre-tèms que tenié la candèlo à soun vesin e bessai meme fasié la bèbo lou jour qu'un carretié pietadous s'en avisè.

« Hoi ! que ! faguè subran aqueste à sei coulègo, e l'autre es un couïdti ?

— Quau, l'autre ?... Ah ! tè, qu'es vrai ! respoundè lou capoulié ; eh ! bèn, se li n'en jugavian uno tambèn ! »

E zóu ! toco, tambour !

E despuei aquelo serado pèr éu memourablo, quand lei carretié vènon à sant Aloï rèndre sei bèu drapèu, sant Pèire es peréu regala d'uno aubado de fifre e de tambour... e proun souvènt meme li n'en juegon doues.

JÓUSELET DE GARLABAN.

ES PAS VRAI ?

Eto ? despièi lou tèms que l'Armana tèn sorgo
En cantant li vertu dóu Mikadò, i'a res
Que nous ague prouva que disèn de messorgo
En afirmançant qu'es sènso pres.

LA CANSOUN DI MOUCHETARELLO

Musico de Fernand VIDAL.

Moderato.

p En-jusqu'à vuei li gai fe libre, Dins si cansoun e
 En *echo. Rall.* *r. Tempo.*
 dins si libre An, plen d'ardour, *pp* An, plen d'ardour, *p* Di rasin negre
poco rall. *f*
 per vi-nocho Canta lou jus, rèi di be-vocho. *mf* Bèu rasin d'or,
 diéu di bam - bocho, *p* A voste tour ! A voste tour !

Sec.

Uno
vues.

f Cri - cra, cri - cra, Li

Toutis
ensen.

f Cri - cra, cri - cra,

fla, li verd e li tara, Noste ci-sèu li coupara.
 Noste ci-sèu li coupara.

Enjusqu'à vuei li gai felibre
Dins si cansoun e dins si libre
An, plen d'ardour,
De rasin negre pèr vinocho
Canta lou jus, rèi di bevocho.
— Bèu rasin d'or, diéu di bambocho
A voste tour !

UNO VOUES

Cri-cra, cri-cra.

TÓUTI ENSÈN

Cri-cra, cri-cra.

LA VOUES

L fla, li verd e li tara,

TÓUTI ENSÈN

Noste cisèu li coupara.

COR

Bu chasselas * rous e sucra
Fiéu aboundous di vèrdi souco,
Fasès veni l'aigo à la bouco,
Fru proumieren, clar e floura.
E voste jus, sirop daura,
Lèvo la set mai noun encouco,
Fiéu aboundous di vèrdi souco,
Bèn chasselas rous e sucra.

Après la mort de la garanço,
Dins lou miejour de nosto Franço
l'aguè grand dòu.
Mai sias vengu, rasin sauvaire ;
Tambèn de déute n'i'a plus gaire,
E de trouba marrit payaire,
Plus res a pòu.

Gramaci vous femo e chatouno

An de beloio galantouno

Que nous fan gau.

S'espargno plus dins li riboto ;

Lou bufet 's plen, pleno la croto,

E manco rèn quand vèn la voto,

Dins li fougau.

Li gènt souvèton qu'acò dure,

Gramaci vous lèu fau endure

Li vièi paret,

Croumpon d'arnés, de jardiniero ;

I boucharié courron à tiero,

An de tourtoun dins la paniero,

Tout marcho dre.

E quouro anas dins la countrado

Dou Nord brumous, vosto arribado

Es coume un rai

Dou clar soulèu de la Prouvènço,

E lou Prussian qu'es toujours sènso

En vous croucant, esbléugi, pènso

Faire un pantai.

Que lou bon Diéu dins nòsti plano

Vous garde sèmpre di marrano,

Rasin d'avoust !

O mauno d'or, coucho-misèri

Qu'avès tira de sis enfèri

Li fièr pacan que fan l'empèri,

Ounour à vous !

REGIS VATTON.

Tira d'*Alis*, coumèdi en tres ate.

A MA FELENO MARGARIDO VIDAL

LOU JOUR DE SA P'ROUMIERO COUMUNIOUN

Pèr tu, ma gènto Margarido,
De flour avèn fa la culido :
Roso blanco d'ou mes de Mai,
En li coupant — es pas de crèire —
M'an di : « Nautre voulèn la vèire
« Car sara bello mai-que-mai.

« A nosto sorre poulideto
« Avèn douna pèr sa raubeto
« Li plus raro de nòsti flour ;
« E sa courouno d'angelouno
« L'avèn facho emé de poutouno
« Qu'an l'innoucènci e la candour.

« E dins si noto cristalino,
« Nòsti campano mistoulino
« — Que n'es d'abiho au siau vounvoun —
« Dins la plus douço di musico,
« L'anaran dire li cantico
« Qu'avèn fa pèr sa coumunioun.

« Voulèn veire si treno bloundo
« Mounto-davalo coume l'oundo
« Encadrant si poulits iue blu,
« Voulèn veire soun dous sourrire,
« P'èi au soulèu anaren dire
« Que d'amount laigue si belu. »

Aquéli voues meloudiouso,
Lis ausiguère à l'aubo blouso
E sian vengu tout encanta ;
En te vesènt, aro, tant bello,
T'anariéu querre lis estello
Se 'njusquo au cèu poudiéu mounta.

Quete bèu jour, ma bèn-amado,
Quouro au bon Diéu vous sias dounado
Ansin pèr la proumiero fès,
Sentès alor que dins vosto amo
Avès la pas e la calamo
E d'ahiranço n'avès ges.

A ti parènt, o ma feleno,
Noun ié fagues jamai de peno ;
Amo-lèi sèmpre de tout cor,
Rènd ié pèr milo li caresso
Que te fasien emé tendresso
En t'apelant : moun car tresor.

A ta sourreto qu'es tant gènto
Digo-ié que sariés countènto
Se, coume dous gai roussignòu,
Estènt que nous fasèn dins l'iage
De tèms en tèms fasias lou viage
De Visan jusquo à Castèu-Nòu.

28 d'abriéu 1912.

ACHILE VIDAL.

DAVANS LOU BUSTE

DÓU CAPOULIÉ EN FÈLIS GRAS

Ououro amire toun maubre un fremin court dins iéu !
L'engèni proumieren de toun valerous fiéu,
Santifica d'amour, dins un divin aubire,
T'a redouna la vido, o Mèstre ! e sèmblo que
Vas parla ; t'escoutan, tóuti demouran quet,
Ti bouco se duerbon, e parles pèr nous dire :

« Enauras, mis ami, la lengo dóu Terraire !
Ounouras li pacan, escoutas vòsti vièi ;
Lou paisan clina, susarèu, sus l'araire,
Dins la grando calamo es un aguste rèi !

« Dins l'ablasigaduro, éu soul, demoro libre !
Quete prefa d'artisto es de saupre enrega !
Pèr ta lèimo vertu, sies tu lou grand felibre,
Païsan, d'aire fort, de soulèu empega !

« La porto de la bòri es grand abadeirado,
Lou siau es travessa dóu craïn d'un liban,
Escoutas-lei charra, li bon vièi cambarado,
Lou vèspre, en roudelet, asseta sus li banc,

« E venès rapuga li bèu mot. Chasque rode
A soun biais, soun secrèt, soun poulit anamen.
Escontas, es aqui que s'acampon li code
Qu'es mestié de pourgi pèr lou grand mounumen.

« Chasco lengo a soun dre de vido e de counquisto,
Tóuti li parladuro an si flour de bèuta
Que soun coume li sorre egalamen requisto
E bessouno de gàubi autant que de canta !

« E pièi sigués uni ! N'i'a pas qu'uno de modo
D'apara nosto lengo : es d'escrèure Coumpan,
Fargas-la d'un bon goust vo leissas-ié sa blodo,
Felibre, e publicas car lou libre es de pan !

« L'obro es tout ! E leissas deforo li batèsto !
Que chascun s'afecioune e boui dis aflaqui !
Mountas lou mounumen : la provo manifestò
De la vido es dins l'obro ! e tenès-vous aqui ! »

A ti bon fiéu encigala,
Ansïn me sèmblo qu'as parla,
Bèu Capoulié, dintre ta glòri !
Adounc, vèi-li coume toujours,
Li crane drole dóu Miejour.
— Pèr apara li dre majour,
Dins li vilasso e pèr li bòri,

| | |
|----------------------------------|----------------------------------|
| Lucharan sèmpre emé 'strembord ! | Fin-qu'à la mort l'apararen, |
| E proche de toun maubre, abord | La lengo d'O ! Lou sarramen |
| Que fuguères noste bon pastre, | Di jouine, vuei te lou semounde, |
| Juran de faire l'emperau ! | E davans lou Segne e lou Priéu |
| Coume tu, seguiren Mistrau | Qu'a fa soun pople renadiéu, |
| E li chaupiren dins si trau | Lou Maianen qu'es quàsi Diéu, |
| Tóuti lis aucèu de malastre ! | Lume de Prouvènço e dóu mounde, |

L'afourtisse d'un cor devot !

Ansìn s'enausiran ti vot,

Se coumpliran ti desirango.

L'apararen jusqu'à la mort

Emé li mascle, emé li fort,

O Capoulié de Malamort !

Pèr l'ounour de Prouvènço e la glòri de França !

JÓUSÈ LOUBET.

MORTUORUM PROUVENÇAU

Dintre li meiour felibre, la mort a manda si cop de daïo sènso pieta e nous a mes en grand dòu, aqueste an.

Dous majourau di mai enfieuca pèr nosto causo e di mai escouta dins lou Counsistòri coume dins lis Escolo, an rendu soun amo au Diéu qu'espèro amoundaut li bràvi gènt pèr ié douna li Joïo eternalo.

L'assessour Adrian Planté, que fuguè coume lou capoulié d'Aquitani, a fa lis adessias de l'ouro darriero à la terro miejournalo, au tèms ounte lou caumpèstre anavo reflouri. Eu èro dins sis setanto-e-un an. Nous a leissa l'eisèmple d'uno vido bèn coumplido. Planté, se pòu dire, avié emé lou poudé d'un mèstre, countribui à l'espandimen de nosto reneis-sènço de l'autre coustat dóu miejour de la França. Tóuti li gènt de soun país an ploura davans soun cros. « Pousquen nous ama entre nautre coume l'avèn ama ! », diguè lou jouine majourau Camelat, que, de tout segur, parlavo pas soulamen pèr sa prouvinço.

Pau Marieton, que tenguè coume se deù la Cancelarié dóu Felibrige e que n'avèn parla à despart dins aqueste *Armana*, mouriguè. ai ! las, pèr Calèndo de 1911 à Niço. Ero nascu à Lioun en 1862. Semblavo que devié passa encaro de l'onguis annado au mitan di felibre ; preparavo, se dis, uno *Istòri dóu Felibrige* ounte soun bèu talènt, adeja tant aremarca

dins *La Terre Provençale*, devié se moustra mai-que-mai pouderaus. Fidèu à nosto Prouvènço, noun a óubrida dins soun testamen Arle e Avignoun.

Un autre ome d'elèi, l'ilustre pintre prouvençau Pau Vayson, es estaoundu pèr un pople en lagremo, à soun toumbèu, dins uno pichoto capello mourtuàri, à Murs, au pèd dóu Mount-Ventour, vers lou mitan de Desèmbre de 1911. Mau-grat l'ivèr, lou soulèu acoumpagnè de si rai aquéu grand amoureux de la clarta, aquéu bèl artisto que soun pincèu. cinquanto an à-de-rèng, retraiguè pastre, pastouro, gardian, enfin tóuti li tablèu de la vido dins noste pais tant pouèti.

Ero mort peréu sus la fin de 1911, lou jouine felibre Pèire Triaire, qu'avié fa flòri i Court d'Amour de Mount-Pelié e que, dins si bèu vint an, sa voues agradivo s'es lassado di cant d'eïçabas.

Enri Pellisson, mèstre en Gai Sabé, nascu en 1846. Soun obro majo es lou *Discours d'un patriote Biarnès* e si vers coume si conte, fuguèron sèmpe ispira pèr l'amour de la terro nadalo. S'es endourmi dins savau meirenaló, que ié siegue douço !

Leonn Bouët, secretàri generau di Felibre de Paris, mort en Desèmbre de 1911, avié servi lou movemen miejournau e coulabora is obro d'union entre li raço latino.

Pau Peytié, bon felibre, coumpousitour tipougrafo counceissènt bèn nosto lengo, enançaïre de plusiour publicacioun prouvençalo en Avignoun, es defunta sus la fin d'aqueste estièu, dins si cinquanto-vuech an.

Lou pouèto Jaroslav Vrehlicky, sèci dóu Felibrige dempièi 1892, cantaire bonèmi de grand talènt, a quita 'questo vido au mes de setèmbre darrié. Lou 14 de setèmbre, la vilo de Prago ié faguè d'óussèqui soulenne ; l'emperaire Francés-Jousè mandè soun plagnun au municipe ; Vrehlicky avié tradu quàuquis-uno dis obro mistralenco.

Au darrié moumen, aprenèn la mort dóu R. Paire Savié de Fourviero, desfunta à Roubioun lou 28 d'òutobre, dins si cinquanto-nðu an. Ero uno grando figuro prouvençalo, un grand predicatour que faguè resclanti lou prouvençau dins li glèiso e li catedralo. Après li decret que barrèron lou mounastié de Ferigoulet èro ana founda un couvènt de soun ordre en Anglo-Terro. Si libre, *Lou Pichot Tresor*, la *Creacioun dóu mounde*, la *Gramatico prouvençalo*, soun counceigu de tóuti. Uno biougrafio d'aquéu felibre déurié èstre escricho pèr noste ensignamen e sa glourificacioun.

Davans Diéu tóuti siegon !

EN SIGNADOU

Pajo.

| | |
|--|----|
| Calendié..... | 3 |
| Crounico felibrenco..... | 7 |
| Sus lou lindau de l'eternita (Don Savié de Fourviero)..... | 15 |
| Oh ! d'aquéli bougre (G. de M.)..... | 16 |
| Lou Dourmihous (F. Mistral)..... | 17 |
| La Poulaio enraumado (Talerasso). | 21 |
| Gravaduro pèr la draïo de l'ermitèri de de St-Jaque, à Cavaïoun (F. Mistral).. | 22 |
| La Nèu (J.-H. Fabre)..... | 22 |
| Lou pres d'un cop d'ïue (Lou Cascarelet). .. | 24 |
| A Millo Nerto de Baroncelli (Léounci Blatière)..... | 24 |
| Au Cabanoun (Pèire Ginouvès)..... | 25 |
| Un bon bougre (Lou Cascarelet)..... | 25 |
| Pèr Ivan Pranishnikoff (F. de Baroncelli) .. | 27 |
| Grand Jo Flourau setenàri de 1913..... | 28 |
| Lou Gripo-roussignòu (F. Mistral)..... | 30 |
| La cansoun dóu Mistrau (M. Bertrand).. | 31 |
| Moun bourrèu (Antòni Blanchard)..... | 32 |
| Lou gros malant (Lou Cascarelet)..... | 33 |
| Tristesso (Charloun Rieu)..... | 34 |
| Belaud de la Belaudiero (G. d. M)..... | 35 |
| Li Messourguié (E. Jouveau) | 39 |
| Liuen di ciéuta (Jan Pagan) | 41 |
| Au Tribunau (Lou Cascarelet).. | 43 |
| L'Amour vengué (F. Favier)..... | 43 |
| Vers lou barbié (Lou Cascarelet)..... | 44 |
| Lou Rose à Paris (J. Marcellin)..... | 44 |
| Li Cicourèio Paranto e musico, E. Jouveau) | 46 |
| Un counsèu (Lou Cascarelet)..... | 47 |
| Tout ço que luse es pas d'or (J.-B. Astier) | 48 |
| Pèr lou Jubilé Proufessourau dóu dóu- tour Grasset (F. Mistral)..... | 49 |
| L'estrangié (Lou Cascarelet)..... | 50 |

Pajo.

| | |
|---|----|
| A Severino (F. de Baroncelli)..... | 51 |
| Lou festin dei Cougourdoun (J. Giordan). .. | 51 |
| La Sourneto de la Vigno (Lou Cascarelet) .. | 53 |
| Pèr lou maridage de Berto Ruat (Valèri Bernard)..... | 54 |
| Lou Saumoun (Talerasso)..... | 55 |
| Nis de mèu (J. Mouné)..... | 58 |
| Une femo avisado (Lou Cascarelet)..... | 58 |
| Sinfounio mistico (Antòni Berthier)..... | 59 |
| Lis Anguielo (Lou Cascarelet)..... | 62 |
| Fauto tapado (Ed. Marrel)..... | 63 |
| Uno ouro de tèms (Lou Cascarelet)..... | 66 |
| Lou Moungetoun (Ravous Ginèsto)..... | 66 |
| Lougico de femo (Lou Cascarelet)..... | 68 |
| Pouian (Ulric Coste)..... | 68 |
| Ferre tounba (Lou Cascarelet)..... | 71 |
| L'Oulivié (Brannoun Durand)..... | 71 |
| L'Erpuro (G. de M.)..... | 74 |
| Lou bon Diéu, lou Pastre e lou Gardian (Bericle) | 75 |
| La Tino (J.-H. Fabre)..... | 76 |
| La sausso de Caculauso (Lou Cascarelet) | 76 |
| Ramoun Berenguié (Marius Jouveau)... .. | 77 |
| Li Messourguié (Lou Cascarelet)..... | 80 |
| Pèr En Pau Mariéton..... | 81 |
| Dicho dóu Capoulié (Valèri Bernard).... | 81 |
| Remembranço d'ancian tèms (A. de Seynes)..... | 85 |
| E l'autre es un couiòti ? (J. de Garlaban). | 86 |
| Es pas vrai ? (Lou Mikadò)..... | 87 |
| La cansoun di Mouchetarello (Regis Vaton)..... | 88 |
| A ma Feleno Margarido Vidal (A. Vidal).. | 91 |
| Davanslou buste de F. Gras (Jousè Loubet) | 92 |
| Mortuoròm..... | 94 |

PC
3398
A7
1913

Armana prouvençau

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY
